Postal Regn No./C.G./RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 285 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, सोमवार 05 मई 2025 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

अहिंसा का जीवित स्वरूप भी तीर्थकरों के जीवन में देखने को मिलते हैं।

A live vision of nonviolence is reflected in the lives of all teerthankars.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

संक्षिप्त समाचार

पद्मश्री योग गुरु बाबा शिवानंद का 128 साल की आयु में निधन

वाराणसी (आरएनएस)। पद्मश्री से सम्मानित 128 वर्षीय योगगुरु बाबा शिवानंद का शनिवार रात 8:45 बजे निधन हो गया। वे पिछले तीन दिनों से सांस लेने में तकलीफ के चलते बनारस हिंदू विश्वविद्यालय अस्पताल में भर्ती थे। बाबा शिवानंद सादगी, योग और ब्रह्मचर्य से परिपूर्ण जीवन जीते थे और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भी उनकी योग साधना के कायल थे। 21 मार्च 2022 को उन्हें देश के चौथे सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्मश्री से नवाजा गया था, और वे यह सम्मान पाने वाले सबसे उम्रदराज व्यक्ति बने थे। उनका जन्म 8 अगस्त 1896 को वर्तमान बांग्लादेश के श्रीहट्ठी में हुआ था।

रविवि की सेमेस्टर परीक्षाएं 28 से, गर्मी के कारण परीक्षा सुबह की पाली में

रायपुर (आरएनएस)। प. रविशंकर शुक्ल विश्विद्यालय द्वारा सेमेस्टर परीक्षाओं की समय-सारिणी घोषित कर दी गई है। रविवि की सेमेस्टर परीक्षाएं 28 मई से प्रारंभ होगी। पर्चे 30 जून तक चलेंगे। सेमेस्टर परीक्षाएं सिर्फ एक ही पाली में होगी। गर्मी को देखते हुए इसके लिए सुबह का समय निर्धारित किया गया है। परीक्षाए सुबह 7 बजे प्रारंभ होगी और 10 बजे तक का समय विद्यार्थियों को दिया जाएगा। परीक्षा केंद्र में छात्रों को 6.30 बजे तक पहुंचना होगा।

मुख्यमंत्री साय के नेतृत्व में आज से प्रदेशव्यापी सुशासन तिहार के तीसरे चरण की शुरुवात

गांव-गांव में सुशासन का संदेश, मुख्यमंत्री साय करेंगे जनता से सीधा संवाद, मिलेगा आमजन को योजनाओं का लाभ

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में प्रदेशव्यापी सुशासन तिहार के तीसरे चरण का शुभारम्भ 5 मई से होगा। इसको लेकर शासन-प्रशासन द्वारा सभी तैयारियां पूरी कर ली गई है। सुशासन तिहार का तीसरा चरण 31 मई तक चलेगा। इस दौरान प्रत्येक जिले की 08 से 15 ग्राम पंचायतों के मध्य समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे, जिनमें आवेदकों को उनके आवेदनों की स्थिति की जानकारी दी जाएगी। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय एवं अन्य मंत्रीगण कुछ समाधान शिविरों में शामिल होंगे तथा आवेदकों से भेंट कर उनकी समस्याओं के निराकरण के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे। तीसरे चरण में मुख्यमंत्री स्वयं हेलीकॉप्टर से औचक रूप से किसी भी गांव में पहुँचकर लोगों से मुलाकात करेंगे और चौपाल लगाकर गांव के विकास और वहां पर पदस्थ मैदानी अमले की कार्यशैली के बारे में लोगों से जानकारी लेंगे। मुख्यमंत्री श्री साय इस दौरान शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन, निर्माण एवं विकास कार्यों की जमीनी हकीकत का भी मुआयना करेंगे।

यहां यह उल्लेखनीय है कि राज्य में शासन-प्रशासन को संवेदनशील, जनोन्मुखी और पारदर्शी बनाने के साथ ही जन समस्याओं के त्वरित समाधान के लिए छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा सुशासन तिहार-2025 का आयोजन किया जा रहा है। सुशासन तिहार के प्रथम चरण का शुभारंभ 08 अप्रैल को हुआ था। इसके तहत 11 अप्रैल तक प्रदेश की जनता से ग्राम पंचायतों और शहरी वार्डों में शिविर लगाकर समस्याओं और मांगों के संबंध में आवेदन लिए गए। आम जनता अपने आवेदनों को सहजता से शासन-प्रशासन तक पहुंचा सके, इसके लिए ग्राम पंचायत से लेकर जिला मुख्यालयों तक प्रमुख स्थानों पर समाधान पेटियां रखी गई, जिसमें लोग अपने आवेदन डाल सके। ऑनलाईन आवेदन लेने की व्यवस्था भी सुनिश्चित की गई।

सुशासन तिहार के पहले चरण में प्रदेश की जनता से 40 लाख से अधिक आवेदन-पत्र प्राप्त हुए थे। इनमें मांग, समस्या और शासकीय योजनाओं से संबंधित आवेदन शामिल थे। जिला प्रशासन द्वारा समर्पित प्रयासों से इन आवेदनों को विभागवार वर्गीकृत कर सुराज अभियान के पोर्टल पर अपलोड किया गया है, और निराकरण की प्रक्रिया पारदर्शिता के साथ जारी है। संबंधित आवेदनों की स्थिति की जानकारी भी हितग्राहियों को समयबद्ध रूप से दी जा रही है।

तीसरे चरण में शासन की प्राथमिकता आम जनता को जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देना है। समाधान शिविरों में हितग्राहियों को योजनाओं के आवेदन प्रपत्र प्रदान किए जाएंगे और पात्रता के अनुसार योजना से लाभ दिलाने की कार्यवाही भी की जाएगी। समाधान शिविरों में ग्रामीणों को योजनाओं का लाभ उठाने के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित भी किया जाएगा।

पहलगाम अटैक के 11 दिन बाद पीएम मोदी से मिले सीएम उमर अब्दुल्ला, 20 मिनट तक हुई बातचीत

नई दिल्ली (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने आज दिल्ली पहुंचकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात की। हाल ही में पहलगाम में हुए भीषण आतंकवादी हमले के बाद दोनों नेताओं के बीच यह पहली औपचारिक बैठक मानी जा रही है। प्रधानमंत्री आवास पर हुई यह बैठक करीब 20 मिनट तक चली।

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार, मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने प्रधानमंत्री मोदी को जम्मू-कश्मीर के मौजूदा सुरक्षा हालात, विशेषकर पहलगाम हमले के बाद बनी स्थिति से अवगत कराया। बैठक में स्थानीय जनता की चिंताओं, पर्यटकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के उपायों और आतंकवाद के खिलाफ राज्य सरकार द्वारा उठाए गए कदमों पर विस्तार से चर्चा की गई।

बताया जा रहा है कि मुख्यमंत्री ने प्रधानमंत्री को राज्य सरकार द्वारा ओवर ग्राउंड वर्कर्स (OGW) की धरपकड़, संदिग्ध ठिकानों पर छापेमारी और स्थानीय समुदायों के साथ संवाद जैसे प्रयासों की विस्तृत जानकारी दी। यह मुलाकात ऐसे समय पर हुई है जब घाटी में एक बार फिर सुरक्षा और राजनीतिक स्थिरता को लेकर सवाल उठ रहे हैं। मुख्यमंत्री की प्रधानमंत्री से यह भेंट न केवल सांकेतिक रूप से महत्वपूर्ण है, बल्कि यह केंद्र और राज्य सरकार के बीच सहयोग और समन्वय को भी दर्शाती है।

सूत्रों के अनुसार, उमर अब्दुल्ला ने प्रधानमंत्री से जम्मू-कश्मीर में आर्थिक गतिविधियों को बढ़ावा देने, पर्यटन क्षेत्र को और सुरक्षित बनाने तथा स्थानीय युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने जैसे विकास से संबंधित मुद्दों पर भी चर्चा की।

हालांकि, प्रधानमंत्री के साथ मीटिंग में किन विशिष्ट मुद्दों पर बात हुई, इसे लेकर मुख्यमंत्री की ओर से अभी तक कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है। आधिकारिक रूप से केवल दोनों नेताओं की मुलाकात होने की पुष्टि ही की गई है।

रामबन में सेना का वाहन 700 फीट गहरी खाई में गिरा, 3 जवान शहीद

रामबन (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर के रामबन जिले में एक दुखद सड़क हादसे में भारतीय सेना के तीन जवान शहीद हो गए हैं। यह घटना जम्मू-श्रीनगर राष्ट्रीय राजमार्ग (ह॥44) पर बैटरी छस्मा के पास हुई, जहां सेना का एक वाहन गहरी खाई में जा गिरा। हादसे की सूचना मिलते ही तत्काल राहत और बचाव कार्य शुरू कर दिया गया है। बताया जा रहा है कि वाहन लगभग 700 फीट गहरी खाई में जा गिरा। घटनास्थल से प्राप्त तस्वीरों में वाहन के बुरी तरह क्षतिग्रस्त अवशेष खाई में बिखरे पड़े दिखाई दे रहे हैं। दुर्घटनास्थल पर शहीद जवानों के पार्थिव शरीर के साथ-साथ उनका सामान और कुछ कागजात भी बिखरे मिले हैं।

सिख दंगों पर राहुल का बड़ा बयान, 'मैं जिम्मेदारी लेता हूं, 1980 के दशक में जो हुआ वह गलत था

नई दिल्ली (आरएनएस)। अमेरिका के ब्राउन यूनिवर्सिटी में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने 1984 के सिख विरोधी दंगों को लेकर अहम टिप्पणी की है। उन्होंने इन दंगों को कांग्रेस पार्टी की 'गलती' स्वीकार करते हुए कहा कि वे पार्टी के इतिहास में हुई हर 'गलती' की जिम्मेदारी लेने को तैयार हैं, भले ही वह घटना उनके राजनीति में सक्रिय होने से पहले की हो।

राहुल गांधी ने यह बयान वॉटसन इंस्टीट्यूट फॉर इंटरनेशनल एंड पब्लिक अफेयर्स में आयोजित एक सत्र के दौरान एक सिख युवक द्वारा पूछे गए तीखे सवालों के जवाब में दिया। सिख युवक ने राहुल गांधी से सीधा सवाल पूछा था। उसने कहा कि जहां उन्होंने (राहुल) भाजपा राज में सिखों को कड़ा या पगड़ी पहनने से रोकने की आशंका जताई थी, वहीं कांग्रेस ने स्वयं 1984 में सिखों की अभिव्यक्ति की आजादी का हनन किया।

भारत ने अब बगलिहार बांध से रोका चिनाब नदी का पानी

नई दिल्ली (आरएनएस)। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए दुखद आतंकी हमले के बाद भारत सरकार ने पाकिस्तान को सख्त संदेश देने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया है। हमले के बाद सिंधु जल संधि को लेकर भारत के कड़े रुख का असर अब जमीन पर दिखना शुरू हो गया है। सूत्रों के हवाले से खबर मिली है कि भारत ने चिनाब नदी का पानी पाकिस्तान की ओर जाने से रोक दिया है। यह कार्रवाई रामबन, जम्मू में स्थित बगलिहार बांध के माध्यम से की गई है। इतना ही नहीं, भारत सरकार अब झेलम नदी के पानी को भी नियंत्रित करने की योजना बना रही है। उत्तरी कश्मीर में बने किशन गंगा बांध के माध्यम से ऐसा ही उपाय करने पर विचार किया जा रहा है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, सोमवार 05 मई 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संक्षिप्त समाचार

पशुओं के लिए जलदान मुहिम को ग्रामीणों ने सराहा, ग्रामीणो के साथ डाक्टर इंदु वशिष्ठ ने बोरिद में रखा जलपात्र

आरंग (विश्व परिवार)। स्वयंसेवी संस्था पीपला वेलफेयर फाउंडेशन विगत तीन वर्षों से मूक पशुओं के लिए जलदान महाअभियान मुहिम चला रहे हैं। जिसके तहत् गर्मी के दिनों में जनसहयोग से आरंग सहित ग्रामीण क्षेत्रों में जगह जगह जलपात्र रखकर उसमें लोगों से जल भरने कहा जाता है। पीपला की इस पहल की गांव गांव में चर्चा और सराहना होने लगी है। ग्रामीण अंचलों में भी लोग अपने घरों के सामने जलपात्र रखने लगे हैं। शुक्रवार को ग्राम बोरिद में सीआरपीएफ कैंप भिलाई के डाक्टर इंदु वशिष्ठ ने मेडिकल कैम्प की सेवायें देने के बाद स्वयं उपस्थित होकर जलदान मुहिम में शामिल हुई। और जलपात्र में जलभर लोगों को मूक पशुओं के लिए जलदान करने अपील की।वही पीपला फाउंडेशन की इस पहल को ग्रामीणों ने सराहा।इस मौके पर फाउंडेशन से महेन्द्र कुमार पटेल, राहुल पटेल,उप सरपंच अमन चंद्राकर, शुभम चंद्राकर,सौरभ चंद्राकर,अशोक चंद्राकर, सूर्यकांत चन्द्राकर ,वाणी चंद्राकर,खेदिया चंद्राकर, रुखमणी चंद्राकर की उपस्थिति रही।

नगर निगम भिलाई क्षेत्र में सुशासन समाधान शिविर का आयोजन 6 से 31 मई तक

भिलाई (विश्व परिवार)। राज्य शासन के निर्देशानुसार शासकीय कामकाज में पारदर्शिता तथा योजनाओं और कार्यक्रमों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करने के लिए सुशासन तिहार 2025 के तृतीय

चरण हेतु समाधान शिविर का आयोजन दिनांक 6 मई 2025 से दिनांक 31 मई 2025 तक समय सुबह 10 बजे से संध्या 5 बजे तक आयोजित किया जावेगा। जिसमें नागरिकों के मांग एवं शिकायत के समाधान से उन्हें अवगत कराया जाएगा। शिविर प्रमुख रूप से नगर निगम भिलाई के सभी जोन में विभिन्न तिथियो पर आयोजित किया जा रहे हैं। जिसके नोडल अधिकारी आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय, सहायक नोडल अधिकारी जोन 1 आयुक्त अजय सिंह राजपूत, जोन 2 ऐशा लहरे, जोन 3 सतीश यादव, जोन 4 अमरनाथ दुबे, जोन 5 कुलदीप गुप्ता रहेंगे। तिथि अनुसार निगम जिस वार्ड में शिविर आयोजित किया जा रहा है। उसका विवरण इस प्रकार है। कृपया सभी नागरिकों से जनप्रतिनिधियों से आग्रह है कि अपने-अपने क्षेत्र में निर्धारित तिथि को शिविर में उपस्थित होकर अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

अंग्रेज़ी अख़बार द हितवाद के समाचार संपादक मुकेश एस. सिंह को डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सेवा सम्मान से नवाजा गया

नई दिल्ली/रायपुर (विश्व परिवार)। नैतिक पत्रकारिता और जनसेवा की दिशा में एक ऐतिहासिक उपलब्धि के रूप में, द हितवाद के रायपुर संस्करण के समाचार संपादक और वरिष्ठ खोजी पत्रकार मुकेश एस. सिंह को रविवार को नई दिल्ली के संविधान क्लब ऑफ इंडिया में आयोजित यूडीएफकॉन 2025 में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम सेवा सम्मान से अलंकृत किया गया। इस प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सम्मान की घोषणा कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री तथा युवा कार्य एवं खेल मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया द्वारा की गई, जिन्होंने सभी चयनित पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। हालांकि, राष्ट्रीय स्तर की आकस्मिक व्यस्तताओं के चलते उन्हें कार्यक्रम से मध्य में ही रवाना होना पड़ा। इसके पश्चात यह सम्मान वरिष्ठ यूडीएफ पदाधिकारियों की उपस्थिति में विधिवत रूप से प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के शुभारंभ में दीप प्रज्वलन के बाद डॉ. मांडविया ने अपने उद्बोधन में कहा, भारत के डॉक्टरों ने कोविड-19 महामारी के दौरान प्रहरी की भूमिका निभाई। उनकी सेवा भावना और प्रतिबद्धता ही भारत को 2047 तक एक स्वस्थ और विकसित राष्ट्र बनाने के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के विजन को साकार करेगी। प्रो. (डॉ.) बी. श्रीनिवास, उप महानिदेशक (मेडिकल एजुकेशन), डीजीएचएस एवं पूर्व सचिव, राष्ट्रीय आयुर्विज्ञान आयोग (एनएमसी), ने अपने वक्तव्य में कहा कि भारत सरकार जूनियर रेजिडेंट्स, सीनियर रेजिडेंट्स, स्नातकोत्तर और स्नातक मेडिकल छात्रों की वर्षों से लंबित समस्याओं को सुलझाने के लिए सॉफ्ट और हार्ड दृष्टिकोण से बहुस्तरीय समाधान प्रस्तुत कर रही है।

डॉ. अरविंद के. ड्रावे, वरिष्ठ सलाहकार, पीजीएमईबी, एनएमसी ने मेडिकल कॉलेजों में रैगिंग की घटनाओं और अकादमिक दबाव के चलते मेडिकल छात्रों में बढ़ती आत्महत्या प्रवृत्तियों पर गहरी चिंता व्यक्त की। उनकी इस चिंता का समर्थन करते हुए प्रो. (डॉ.) ओम प्रकाश, उप चिकित्सा अधीक्षक, आईएचबीएएस ने संस्थागत मानसिक स्वास्थ्य नीति की आवश्यकता पर बल दिया। प्रो. (डॉ.) नीमेश जी. देसाई, पूर्व निदेशक, आईएचबीएएस ने मानसिक स्वास्थ्य की व्यापक समझ के साथ छात्रों के लिए पूर्वानुमानात्मक मानसिक सुरक्षा ढांचे की पैरवी की।

डॉ. सुनील खत्री, सुप्रीम कोर्ट के मेडिकोलीगल विशेषज्ञ और डॉ. चारु माथुर, सुप्रीम कोर्ट की अधिवक्ता ने चिकित्सकों और मेडिकल छात्रों द्वारा झेले जा रहे कानूनी मामलों में तेजी से हो रही वृद्धि पर चिंता जताई और कानूनी सुरक्षा प्रणाली को मजबूत करने की मांग की।

आवेदनों का समाधान करने आज से 6 वार्डों में शिविर लगेंगे

सुशासन तिहार के तृतीय चरण में समाधान शिविरो का हो सफल आयोजन : आयुक्त

दुर्ग (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम आयुक्त सुमित अग्रवाल ने सुशासन तिहार 2025 की तैयारियों के संबंध में सफल आयोजन बनाने के लिए आवश्यक बैठक लेकर अधिकारियों को निर्देश दिए।बैठक समीक्षा करते हुए आयुक्त ने कहा कि सुशासन तिहार के अंतर्गत दुर्ग नगर निगम में तृतीय चरण मं समाधान शिविरों का आयोजन बेहतर ढंग से सफलपूर्वक संपन्न हो, यह सुनिश्चित किया जाए।आवेदनों का निराकरण गुणवत्तापूर्वक हो। शिकायते संबंधी आवेदनों को प्राथमिकता के साथ निराकरण किया जाए। उन्होंने नोडल अधिकारियों से आवेदन निराकरण के संबंध में जानकारी ली।

नगर पालिक निगम सीमा क्षेत्र अंतर्गत आवेदनों का समाधान करने 5 मई से इन वार्डो में शिविर लगेंगे। दिनांक 5 मई को वार्ड क्र. 7 तिलक उ.मा.वि शिक्षक नगर वार्ड, क्रमांक, 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9, 10, 11, 30, 31 एवं 56 के लिए सुशासन तिहार 2025 के तृतीय चरण के लिए समाधान शिविर का आयोजन किया जाएगा। दिनांक 14 मई, वार्ड क्र. 23 स्वामी आत्मानंद उ.मा.वि दीपक नगर वार्ड क्रमांक 23, 24, 25, 26, 47, 48, 59 और 60 के नागरिको के लिए समाधान शिविर आयोजन किया जाएगा।

शेष बचे वार्ड में 16 मई वार्ड- 52 बोरसी स्कूल, 21 मई जेआरडी स्कूल वार्ड- 39, 23 मई कुशाभाऊ ठाकरे भवन वार्ड -15, 27 मई मानस भवन रविशंकर स्टेडियम वार्ड- 29, समाधान शिविरो का 5 मई से 31 मई तक आयोजन किया जाएगा।

हटरी बाजार दुकान के ऊपर टीन सेड पर चला निगम का बुलडोजर, 30 से ज्यादा अतिक्रमण हटाया

लाउड स्पीकर से हटाने की दी चेतावनी, कई दुकानदार स्वयं निकलना शुरू कर दिया

दुर्ग (विश्व परिवार)। निगम आयुक्त सुमित अग्रवाल के निर्देश पर आज तीसरे दिन भी अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई चली। निगम की टीम ने इंदिरा मार्केट क्षेत्र हटरी बाजार लाइन दुकानों के ऊपर टीन सेट अनाज लाइन, पटवा लाइन, चंडी मंदिर क्षेत्र प्रेस सहित टीन सेट सहित त्रिपाल लगाकर बना लिए गए को हटाया गया।इसके अलावा नया पारा चौक में भी अतिक्रमण की कार्यवाही की गई है। बाहर निकाल कर व्यवसाय करने वालो के विरुद्ध समान जब्ती की कार्यवाही की गई है। साथ ही रोड में फैला कर व्यवसाय करने वालो को लगातार चेतावनी दी जा रही है।

कल से सामान जब्ती की कार्यवाही होगी, जिसमे किसी प्रकार की सुनवाई के मौका नही दिया जाएगा। अतिक्रमण के कार्यवाही के दौरान बाजार अधिकारी शुभम गोइर द्वारा निगम की टीम के साथ लाउड स्पीकर पर व्यवसाइयों से कब्जे हटाने में सहयोग की अपील की, कई दुकानदार स्वयं निकलना शुरू कर दिया। इस दौरान बाजार अधिकारी शुभम गोईर, अतिक्रमण अधिकारी परमेश्वर के अलावा के बाजार विभाग के ईश्वर वर्मा, शशिकांत यादव सहित निगम की टीम मौजूद रहे। अतिक्रमण हटाओ अभियान लगातार जारी रहेंगी, कार्रवाई के दौरान मौके पर पुलिस मौजूद रहें।

गौ सेवा आयोग अध्यक्ष को बोहरा ने सौंपा ज्ञापन

दुर्ग (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ राज्य गौ सेवा आयोग के अध्यक्ष विशेश्वर पटेल जी के सर्किट हाउस आगमन पर जिला पशुधन क्रूरता निवारण समिति के अशासकीय सदस्य प्राणी मित्र गौ भक्त संजय बोहरा ने अवसर पर अपने दीघह् अनुभव के आधार पर अध्यक्ष गौ सेवा आयोग को रचनात्मक सुझाव लिखित में ज्ञापन स्वरूप भेंट किया इस अवसर पर गौ सेवा आयोग के सचिव डॉ ध्रुव ,,दुर्ग उपसंचालक पशु चिकित्सा सेवा भी उपस्थित थे।

बोहरा ने लिखित ज्ञापन में रचनात्मक सुझाव में बताया की गौशाला को हम दान और अनुदान से नहीं अपने स्वयं के आधार पर गोबर गोमूत्र उत्पाद से हम बहु उपयोगी स्वास्थ्य और औषधि का निर्माण करने और गोबर गोमूत्र से हम विभिन्न प्रकार के उत्पाद उत्पादन कर आय बढ़ा सकते हैं।

मुख्य रूप से गौशाला को सबल करने हेतु समय-समय पर ट्रेनिंग ,,सहयोग और सुझाव इस सख्त आवश्यकता है हम बहु उपयोगी उत्पाद का उत्पादन कर आत्मनिर्भरता की ओर तो बढ़ेंगे ही जल जमीन और वातावरण को भी दूषित होने से बचाएंगे गौशाला का नाम बदलने का सुझाव दिया गया जिसे गौ सेवा आयोग ने स्वीकार कर गोधान शब्द का उपयोग भविष्य में गौशाला के बदले करने का निर्देश जारी करने का आश्वासन दिया।

संजय बोहरा ने गोटन जो बंद हो चुके हैं ऐसे गोटनों को अर्थात गोधान के रूप में संचालित कर उसे खाली जगह का उपयोग करने का सुझाव दिया और पशुधन तस्करी को रोकने के लिए जिला प्रशासन का विशेष सहयोग जरूरी होता है और यह कार्य पुलिस प्रशासन के सहयोग से अच्छे तरीके से मवेशियों की तस्करी पर रोक लगाया जा सकता है मध्य प्रदेश की तर्ज पर हम भी हमारे यहां की गौशाला को आर्थिक रूप से मजबूत करने के लिए उनके नियम को लागू करना चाहिए। -**संजय बोहरा**

मोबाइल फोन में ज्यादा समय व्यतीत करने से स्वास्थ्य दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा : भगत

व्यायाम शाला योजना का शुभारंभ नौ गांवों के लिए बांटा गया सामग्री

जशपुर (विश्व परिवार)। अखिल भारतीय वनवासी कल्याण जशपुर के द्वारा व्यायाम शाला योजना का शुभारंभ जशपुर के ग्राम पंडरीपानी और गम्हरिया में किया गया। जिसके लिए शुरुवाती दौर में नौ गांवों के लिए व्यायाम सामग्री उपकरणों को बांटा गया। जिससे गांवों के सभी नव युवक उन सामग्री उपकरणों का उपयोग कर अपने शरीर को स्वस्थ, रोगमुक्त, शारीरिक विकास कर अपने उज्जवल भविष्य के ओर बढ़ सके। और आने वाले समय में एक अच्छे पद प्रतिष्ठा प्राप्त कर सके। सभी युवाओं को मिलकर संगठित होकर व्यायाम शाला का लाभ ले और सभी को इसकी ओर प्रेरित करे।

जनपद पंचायत अध्यक्ष गंगा राम भगत ने कहा कि आज सभी युवा अपने दैनिक जीवन में खेल व शारीरिक व्यायाम से कहीं न कहीं दूर होते जा रहे हैं। और नव पीढ़ी युवक मोबाइल फोन में ज्यादा समय व्यतीत कर रहे। जिससे उनके स्वास्थ्य ख़राब, शारीरिक विकास न होना, थकावट, मानसिक तनाव जैसे दिक्कतो का सामना करना पड़ता है।

सभी युवा पीढ़ी व्यायाम शाला में सभी प्रकार के सामग्रियों उपकरणों का उपयोग कर अपने उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ सकते है और अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकते हैं। साथ में गए व्यायाम ट्रेनर प्रदीप ने बारी बारी कर प्रत्येक उपकरणों का उपयोग कैसे किया जाता है, इसका क्या लाभ होगा बताया व करके दिखाया। इस अवसर पर अखिल भारतीय वनवासी कल्याण आश्रम के संगठन मंत्री रविन्द्र नाथ शिखर, जनपद पंचायत जशपुर अध्यक्ष गंगा राम भगत, भाजपा जिला सह मीडिया प्रभारी दीपक सिंह, व्यायाम ट्रेनर प्रदीप न्यूरेथी, मलखान ट्रेनर महेश कुमार, विलियम कुजूर, व कल्याण आश्रम कार्यकर्ता उपस्थित रहें।

एनएमडीसी ने उत्पादन में 15 प्रतिशत की वृद्धि के साथ अप्रैल में अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन दर्ज

हैदराबाद (विश्व परिवार)। भारत के सबसे बड़े लौह अयस्क उत्पादक एनएमडीसी ने अप्रैल 2025 के माह में शानदार प्रदर्शन किया। कंपनी ने 4.00 एमटी लौह अयस्क का उत्पादन किया तथा 3.63 एमटी बिक्री की, जो इसकी स्थापना के बाद से अब तक का सर्वोच्च उत्पायदन अप्रैल माह में किया। पिछले वर्ष की इसी समान अवधि की तुलना में राष्ट्रीय खनन कंपनी नेउत्पादन में 15 प्रतिशत तथा बिक्री 2.8 प्रतिशत की वृद्धि के साथनए सर्वोच्चि रिकार्ड दर्ज किए हैं तथा वित्त वर्ष 2026 की मजबूत शुरुआत की है।

वित्त वर्ष 26 की इस असाधारण शुरुआत पर एनएमडीसी के सीएमडी श्री अमिताभ मुखर्जी ने कहा अपने संबोधन में कहा कि हमारा लगातार प्रदर्शन एनएमडीसी की उत्कृष्टता और विकास के प्रति प्रतिबद्धता को दर्शाता है। अप्रैल माह में हमारा रिकॉर्ड-तोड़ प्रदर्शनके साथ ही हमारी प्रमुख लौह अयस्क खानों-किरंदुल, बचेली तथा दोणिमलै से अब तक के सर्वश्रेष्ठ डिस्पैच आंकड़े जो कि पिछले वर्ष की इसी समान अवधि की तुलना में क्रमश: 12त्न, 4 प्रतिशत एवं 88 प्रतिशत की वृद्धि हुई हैजो कि हमारी अग्रणी स्थिति को मजबूत करता है और 2030 तक 100 एमटी खनन कंपनी बनने के हमारी महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

अप्रैल 2025 में, एनएमडीसी ने अपना अब तक का सर्वोच्चं मासिक डिस्पैच हासिल किया, जो पिछले वर्ष की इसी समान अवधि की तुलना में 23 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि को दर्शाता है। बचेली कॉम्प्लेक्स ने भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए 2.22 लाख टन (एलटी) के साथ अप्रैल माह में अब तक का सर्वश्रेष्ठ रोड डिस्पैच दर्ज कियाजो 25 प्रतिशत की उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इसके अलावा, कंपनी का पेलेट उत्पादन 0.23 लाख टन के सर्वोत्त म उच्च स्तर पर पहुंच गयाजो कि 2018 में पिछले अप्रैल माह का रिकॉर्ड को पार कर गया। एनएमडीसी का उल्लेखनीय प्रदर्शन इसकी प्रचालन क्षमता तथा रणनीतिक दृष्टि को प्रदर्शित करता है। कंपनी कच्चे माल को सुरक्षित करने तथा भारत की बढ़ती इस्पात मांग को पूरा करने के लिए समर्पित है जो कि राष्ट्रीय इस्पात नीति में निहित है।

सुशासन तिहार में लापरवाही पर कार्रवाई

दो सचिव निलंबित, तीन अधिकारियों को कारण बताओ नोटिस

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत राजनांदगांव सुश्री सुरूचि सिंह द्वारा सुशासन तिहार अभियान के तहत आवेदनों के निराकरण में लापरवाही बरतने पर दो ग्राम पंचायत सचिवों को तत्काल प्रभाव से निलंबित कर दिया गया है। ग्राम पंचायत अरजकुंड के सचिव श्री भुवाल सिंह उईके तथा ग्राम पंचायत सांगिनकछार के सचिव श्री नरेन्द्र कुमार वर्मा को उनके कर्तव्यों के प्रति उदासीनता एवं अनधिकृत अनुपस्थिति के कारण निलंबित किया गया है। इसके अतिरिक्त, ग्राम पंचायत बोदेला के सचिव श्री कृष्ण कुमार साहू, जनपद पंचायत डोंगरगढ़ की सहायक विकास विस्तार अधिकारी सुश्री गायत्री डेकाटे एवं सहायक आंतरिक लेखा परीक्षण एवं करारोपण अधिकारी श्री सी. कुजूर को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे
विविध कार्य हेतु निविदा सूचना
निविदा क्रमांक: सीपीएम/ईएल/25-26/10 दिनांक 30-04-2025 (खुली निविदा) (टू पैकेट सिस्टम)
कार्य : "दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के बिलासपुर डिविजन के चांपा-रायगढ़ एवं चाम्पा-गेवरा रोड खंड (सभी यार्ड सहित) के बीच मौजूदा 1x25 केवी इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन सिस्टम 2x25 को केवी इलेक्ट्रिक ट्रैक्शन सिस्टम में अपग्रेड करने के लिये डिजाइन, आपूर्ति, निर्माण, परीक्षण और कमीशनिंग (130 आरकेएम/423 टीकेएम)"। निविदा मूल्य : ₹ 154,55,45,891/- (एक सौ चौवन करोड़ पचपन लाख पैंतालिस हजार आठ सौ इनकाबने रूपये मात्र), अमानत राशि: ₹ 78,77,700/-, निविदा दस्तावेज की लागत: शून्य, कार्य पूरा होने की तिथि: 06 (छ:) महीना स्वीकृति पत्र प्राप्त होने की तिथि से। निविदा बंद होने का समय एवं दिनांक: 23-05-2025 को 15.00 बजे तक। निविदा खोलने का समय एवं दिनांक: 23-05-2025 को 15.30 बजे तक। विस्तृत जानकारी/ निविदा दस्तावेज का पात्रता का मापदंड तथा अन्य विस्तृत विवरण हेतु मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (निर्माण)/दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, बिलासपुर-पिन 495004 अथवा उप मुख्य परियोजना प्रबंधक पश्चिम/निर्माण/नागपुर, दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे, नागपुर - पिन: 440001 के कार्यालय से संपर्क करें अथवा निविदा कागजात जो हमारी वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध है उसे डाउनलोड कर/देख सकते हैं।
उप मुख्य अभियंता/निर्माण
CPR/10/FL/38 द. पू. म. रेलवे, बिलासपुर
South East Central Railway @secrail

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com
पत्र क्र./19684/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 28-04-2025
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 19684
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107E00121** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **G.T.R.SWAMI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **G.P.R.SWAMI** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **ANURADHA SINHA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SANJAY KUMAR SHRIVASTAVA** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीतिसिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com
पत्र क्र./20315/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 30-04-2025
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 20315
वार्ड का नाम- 4 - यतियतन लाल वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 4 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR104D00072** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **JYODHA RAM SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAM SINGH SAHU** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **MADHURI BAGHEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O YOGESH KUMAR BAGHEL** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीतिसिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-1)
संतोषी नगर, खमतराई पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone1@gmail.com
पत्र क्र./20166/ न.पा.नि./जोन क्र.-1/2025
रायपुर, दिनांक 28-04-2025
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 20166
वार्ड का नाम- 16 - वीर शिवाजी वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 16 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR107E00350** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SUNIL PATEL, SANGEETA BEN PATEL, RAJESH PATEL, SANGEETA PATEL** पिता/पति, श्री/श्रीमती **KESHAV PATEL, SUNIL PATEL, RAJESH PATEL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **LALITA AJGALEY** पिता/पति, श्री/श्रीमती **W/O SANTOSH KUMAR AJGALEY** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख** / वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्रीमती प्रीतिसिंह
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (1)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./16373/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 16-04-2025
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 16373
वार्ड का नाम-10- रानी लक्ष्मी बाई वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 10 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR227M00155** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **SHABANA KHAN** पिता/पति श्री/श्रीमती **W/O MUSTAK KHAN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती डागेश्वरी साहू** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - श्री भेखलाल साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानन्द दूबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-3)
शंकर नगर पानी टंकी के नीचे, रायपुर
E-mail ID - rmczone3@gmail.com
पत्र क्र./20074/ न.पा.नि./जोन क्र.-3/2025
रायपुर, दिनांक 02-05-2025
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 20074
वार्ड का नाम-11- कालीमाता वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड- 11 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR330F0026A** जो कि निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PAWAN KUMAR SEN** पिता/पति श्री/श्रीमती **S/O TEKRAM SEN** केनाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्रीमती नेमिन बाई** पिता/पति श्री/श्रीमती **पति - श्री गोवर्धन साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री रमेश कुमार जायसवाल
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रं.- (3)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-10)
अमलीडीह पानी टंकी, रायपुर
E-mail ID - rmczone10@gmail.com
पत्र क्र./20529/ न.पा.नि./जोन क्र.-10/2025
रायपुर, दिनांक 02-05-2025
इश्तिहार
नामांतरण प्र.क्र. 20529
वार्ड का नाम- 53 - बाबु जगजीवनराम वार्ड
एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 53 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR446M91055** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **INDIRA DEVI JAIN** पिता/पति, श्री/श्रीमती **JAWNI LAL JAIN** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **TRIPTI PANIGRAHI** पिता/पति, श्री/श्रीमती **GULSHAN KUMAR SWARNKAR** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/ अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।
-सूचना जारी करें-
श्री विवेकानंद दुबे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-(10)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर सोमवार 05 मई 2025

मंत्री ने पीड़ित परिजनों से की मुलाकात सांझा किया दर्द, दोषीयो के खिलाफ जल्द कार्यवाही का दिया भरोसा

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- सूरजपुर जिले रामानुजनगर थाना क्षेत्र में एक मासूम बच्ची की दरिंदगी से की गई हत्या ने पूरे जिले को गहरे शोक और आक्रोश में डुबो दिया है। इस दिल दहला देने वाली घटना के बाद हर ओर इंसाफ की मांग उठ रही है। शुक्रवार को प्रदेश की कैबिनेट मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े पीड़ित परिवार से मिलने गांव पहुंचीं और अपने संवेदनाओं के साथ उनका दुख बांटा। उनके साथ प्रेमनगर विधायक भूलन सिंह मरावी भी मौजूद रहे।

परिजनों से मुलाकात के दौरान मंत्री राजवाड़े की आंखें भी भर आईं। उन्होंने परिवार को ढांढस बंधाते हुए कहा, यह सिर्फ आपकी नहीं, पूरे समाज की पीड़ा है। एक माँ के तौर पर मैं इस दर्द को महसूस कर सकती हूं। सरकार इस मुश्किल घड़ी में हर कदम पर आपके साथ खड़ी है और दोषियों को बख्शा नहीं जाएगा।

गृहमंत्री से चर्चा कर दिए त्वरित कार्रवाई के निर्देश- मंत्री ने मौके पर ही राज्य के गृहमंत्री विजय शर्मा से फोन पर चर्चा की और सूरजपुर पुलिस अधीक्षक को निर्देशित किया कि आरोपी को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर कड़ी से कड़ी सजा दिलाई जाए। उन्होंने स्पष्ट कहा, ऐसे दरिंदों के लिए समाज में कोई जगह नहीं है। कानून अपना काम करेगा और मासूम को जरूर न्याय मिलेगा।

सरकार की संकल्पना: हरसंभव मदद और बच्चियों की सुरक्षा सर्वोपरि- मंत्री राजवाड़े ने भरोसा दिलाया कि सरकार न सिर्फ परिवार को हरसंभव सहायता देगी, बल्कि बच्चियों की सुरक्षा के लिए और कड़े कदम भी उठाएगी। उन्होंने कहा, ‐यह केवल कानूनी नहीं, सामाजिक युद्ध है, जिसे हम मिलकर लड़ेंगे। अब किसी मासूम का बचपन दरिंदगी की बलि नहीं चढ़ने देंगे।

महामाया खदान ने बदली 86 भूमि स्वामीयो की तकदीर कैबिनेट मंत्री ने सौंपे नियुक्ति पत्र

रोजगार से ही घरों में आती है खुशहाली –मंत्री राजवाड़े

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-कोयला खनन के क्षेत्र में नई उम्मीदों का सवेरा लेकर आई एसईसीएल की महामाया खुली कोयला खदान परियोजना ने शनिवार को 86 युवाओं के जीवन में नया उजाला भरा। भूमि अधिग्रहित परिवारों के इन युवाओं को परियोजना के प्रथम चरण में रोजगार का सुनहरा अवसर प्रदान किया गया।

उक्त मौके पर छत्तीसगढ़ की कैबिनेट मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने स्वयं नियुक्ति पत्र सौंपकर युवाओं के चेहरों पर मुस्कान बिखेरी। कार्यक्रम में हजारों ग्रामीणों का जनसैलाब उमड़ा, जो इस बदलाव का गवाह बना। बहरहाल महामाया खदान परियोजना न केवल सूरजपुर के आर्थिक विकास को गति दे रही है, बल्कि स्थानीय युवाओं और महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का माध्यम भी बन रही है। यह परियोजना क्षेत्र के लिए समृद्धि और खुशहाली का प्रतीक बनकर उभरी है, जिसने ग्रामीणों के सपनों को नई उड़ान दी है।

रोजगार से समृद्धि का रास्ता - मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने युवाओं को बधाई देते हुए कहा, जिस घर में रोजगार आता है, वहां समृद्धि अपने आप चली आती है। कोयला उद्योग देश की रीढ़ है, जो न केवल बिजली उत्पादन करता है, बल्कि हजारों परिवारों को रोजगार देकर उनकी जिंदगी संवारता है। उन्होंने एसईसीएल प्रबंधन से अपील की कि जिन परिवारों की जमीन अधिग्रहित हुई है और उन्हें अभी तक रोजगार नहीं मिला, उन्हें भी शीघ्र अवसर प्रदान किया जाए।

महिलाओं ने भी लहराया परचम - इस परियोजना में न केवल युवाओं, बल्कि 7 महिलाओं को भी रोजगार का अवसर देकर महिला सशक्तिकरण की मिसाल कायम की। ये महिलाएं अपने परिवार की पहली सदस्य हैं, जिन्हें इस तरह का रोजगार मिला। नियुक्ति पत्र पाकर उनकी आंखों में आत्मविश्वास और खुशी की चमक साफ झलक रही थी।

खनिज संपदा से संवर रहा सूरजपुर -कार्यक्रम में विशेष अतिथि के रूप में मौजूद वन विकास निगम अध्यक्ष रामसेवक पैकरा ने कहा, सूरजपुर खनिज संपदा का खजाना है। एसईसीएल जैसी कंपनियां इस क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं लेकर आई हैं। महामाया प्रोजेक्ट इसका जीवंत उदाहरण है। उन्होंने युवाओं से मेहनत और लगन के साथ काम करने का आह्वान किया।

विकास की नई राह - एसईसीएल भटगांव क्षेत्र के मुख्य महाप्रबंधक दिलीप बोबड़े ने छत्तीसगढ़ी भाषा में स्वागत भाषण देकर ग्रामीणों का दिल जीत लिया। उन्होंने कहा, महामाया खदान केवल रोजगार का साधन नहीं, बल्कि क्षेत्र में सड़क, बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मूलभूत सुविधाओं को बेहतर बनाने का जरिया बनेगी। उन्होंने परियोजना के तहत कुल 668 लोगों को रोजगार देने के लक्ष्य की जानकारी दी, जिसमें से 214 हितग्राही जरही क्षेत्र से चयनित किए गए हैं।

युवाओं की जुबानी: अब गांव नहीं छोड़ना पड़ेगा- नियुक्ति पत्र पाने वाले युवाओं के चेहरों पर खुशी की लहर दौड़ रही थी।

शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय केतका का परीक्षा परिणाम सत प्रतिशत रहा

शाला प्राचार्य शिक्षकों एवं अभिभावकों के प्रति आभार व्यक्त किया

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय केतका के स्थानीय परीक्षा परिणाम कक्षा 9वी और 11वीं घोषित कर दिया गया है । गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को प्रमाण पत्र भी दिए गए । शाला प्रबंध एवं विकास समिति के अध्यक्ष रामाशंकर सिंह के मुख्य अतिथि में आयोजित कार्यक्रम में अधिकतम अंक प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया गया । कक्षा नवमी में 75 प्रतिशत अंकों के साथ लवकेश कुमार प्रथम स्थान , द्वितीय स्थान पर अमिता मिंज 70.17त्न और चांदनी सिंह 67.5 प्रतिशत अंकों के साथ तृतीय स्थान पर रही । वहीं कक्षा 11वीं में 69.6 प्रतिशत के साथ विकास सिंह वाणिज्य संकाय से प्रथम स्थान , सुमन सिंह विज्ञान संकाय 64.6त्न के साथ द्वितीय तथा पुष्पा सिंह विज्ञान संकाय 63.8 प्रतिशत के साथ तृतीय स्थान पर रहीं । कार्यक्रम में विशेष रूप से ग्राम केतका के भूतपूर्व सरपंच एवं वर्तमान उप सरपंच बाबूलाल सिंह तथा शाला विकास समिति के सदस्य अर्जुन राम उपस्थित थे । शाला विकास एवं प्रबंधन समिति के अध्यक्ष रमाशंकर सिंह ने कहा कि अगले सत्र से हर 15 दिवस में वे स्वयं स्कूल का निरीक्षण करेंगे और स्कूलों के बच्चों की उपस्थिति पर विशेष नजर रखेंगे तथा साथ उन्होंने अगली कक्षा में जाने वाले छात्र-छात्राओं को इससे भी अधिक अंक प्राप्त करने हेतु प्रेरित किया तथा जो छात्र छात्राएं पूरक हैं उन्हें अच्छे से पढ़ाई कर परीक्षा देने और उत्तीर्ण होने के लिए रास्ता बताया और जो बच्चे अनुत्तीर्ण हुए हैं उन्हें हताश न होकर पुन: मेहनत कर परीक्षा देने और पास करने की इच्छा शक्ति बढ़ाने को बताया श्री बाबूलाल सिंह जी के द्वारा भी बच्चों के भविष्य के लिए शुभकामनाएं दी गई और समय-समय पर विद्यालय में होने वाले कार्यक्रमों की भी प्रशंसा की गई तथा संतोष प्रद रिजल्ट रहने के कारण प्राचार्य सहित समस्त स्टाफका आभार भी जताया । विद्यालय के प्राचार्य जे आर शांडिल्य के द्वारा छात्र-छात्राओं को बताया गया कि किस प्रकार तैयारी करने से बच्चे बोर्ड क्लास में अच्छे नंबर से पास हो सकते हैं , इस वर्ष बोर्ड परीक्षा का भी रिजल्ट अच्छा रहेगा उन्होंने शाला विकास समिति को आश्वासन भी दिया ।

अंतिम संस्कार के लिए मुक्तिधाम पहुंचे लोगों पर मधुमक्खियों ने किया हमला

कोरबा(विश्व परिवार)। युवा कांग्रेस नेता सुमित दुहलानी के अंतिम संस्कार के दौरान मलदा घाट मुक्तिधाम पर उस वक्त अफरा-तफरी-भगदड़ मच गई जब यहां मधुमक्खियों के झुंड ने एकाएक हमला बोल दिया। मुक्तिधाम पहुंचे नगर वसियों सहित स्व.सुमित दुहलानी के परिजनों, नगर पालिका अध्यक्ष से लेकर लगभग हर कोई मधुमक्खियों के दंश का शिकार हुआ है। कटघोरा मेन रोड निवासी सुमित दुहलानी 36 वर्ष का गुरुवार को आकस्मिक में निधन दिल का दौरा पडने से हो गया। आज सुबह के वक्त अंतिम संस्कार के लिए अंतिम यात्रा निवास से प्रारम्भ हुई और वार्ड 10 स्थित मालदा घाट ले जाया गया। यहां पार्थिव देह को रखकर अंतिम संस्कार की विधि शुरू की जा रही थी। दीपक जलाया ही गया था कि एकाएक मधुमक्खियों के झुंड ने हमला करना शुरू कर दिया। मधुमक्खियों को आता देख मुक्तिधाम में मौजूद लोग इनसे बचने के लिए इधर-उधर दौडने भागने लगे। कुछ लोगों ने तो मलदा घाट के तालाब में कूद कर अपनी रक्षा की तो अधिकांश लोग इधर-उधर भागते-छुपते रहे। 40 से 50 लोग मधुमक्खियों के चपेट में आए हैं। इन सभी ने तत्काल कटघोरा के विभिन्न निजी-सरकारी अस्पतालों में पहुंचकर अपना इलाज पानी करना शुरू कर दिया है। सुमित दुहलानी के परिजन भी मधुमक्खियों के दंश की चपेट में आए हैं। फिलहाल समाचार लिखने तक

कलेक्टर ने सुशासन तिहार 2025 के संबंध में ली पत्रकार-वार्ता

सुशासन की स्थापना को लेकर सरकार लगातार प्रतिबद्धता के साथ कर रही कार्य

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-कलेक्टर श्री एस. जयवर्धन की उपस्थिति में आज कलेक्टोरेट सभाकक्ष में सुशासन तिहार 2025 के संबंध में पत्रकार-वार्ता रखी गई थी। जिसमें उपस्थित पत्रकार बंधुओं के समक्ष सुशासन तिहार के उद्देश्य और क्रियान्वयन के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराई गई। पत्रकार वार्ता में कलेक्टर द्वारा तृतीय चरण (05 मई से 31 मई) समाधान शिविर पर मीडिया की प्रतिनिधियों से सुशासन तिहार के बेहतर प्रचार प्रसार हेतु सहयोग के अपील की गई ताकि शिविरों के माध्यम से आमजन को ज्यादा से ज्यादा जनहितकारी में योजनाओं के संबंध में जानकारी मुहैया कराई जा सकें।

उन्होने बताया कि सूरजपुर जिले में सुशासन तिहार अंतर्गत कुल 83465 आवेदन प्राप्त हुए हैं। दूसरे चरण में संबंधित विभागों द्वारा लगभग 01 माह इन आवेदनों का निराकरण किया गया है। कल से शुरू होने वाले तीसरे चरण में समाधान शिविरों के माध्यम से आवेदको को उनके आवेदनों की जानकारी दी जायेगी। उन्होंने बताया इस दौरान जिले के 08 से 15 ग्राम पंचायतों के बीच एक समाधान शिविर का आयोजन किया जाएगा। नगरीय निकायों में भी शिविर लगाए जाएंगे। जिले में कुल 61 समाधान शिविर आयोजित किए जाएंगे। इसके अंतर्गत नगरीय निकायों में 27 और सभी विकासखंड के जनपद पंचायतों में कुल 34 शिविर आयोजित किए जाएंगे। पत्रकार वार्ता में पत्रकार बंधु, जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू व अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

मंत्री को देख दूरस्थ ग्राम वासियों का छलका दर्द

पानी, राशन और घूसखोरी से परेशान जनता की शिकायत तो मंत्री ने अफसरों को लगाई फटकार

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- गाँव चलो, बस्ती चलो’ अभियान के अंतर्गत शुक्रवार को कैबिनेट मंत्री व भटगांव विधायक श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने सूरजपुर जिले के ओड़गी ब्लॉक के कई बीहड़ और सुदूर गांवों में जन चौपाल लगाकर आम लोगों की समस्याएं सुनीं।इस दरम्यान किसी मंच या कुर्सी की जरूरत नहीं पड़ी वरन मंत्री खुद जमीन और पत्थरों पर बैठीं, और ग्रामीणों की आवाज़ को प्राथमिकता दी। गांव के लोगों ने खुलकर अपनी बातें रखीं और मंत्री ने हर शिकायत पर तुरंत एक्शन लिया।

दूधो गांव में जलसंकट, विभाग पर भड़की मंत्री - दौरे की शुरुआत ग्राम दूधो से हुई, जहां ग्रामीणों ने पेयजल संकट की बड़ी समस्या सामने रखी। जल संसाधन विभाग की लापरवाही पर मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े ने गहरी नाराजगी जताई। उन्होंने चौपाल में विभागीय अधिकारी की अनुपस्थिति को गंभीरता से लेते हुए एसडीओ को फटकार लगाई और तत्काल नोटिस जारी करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा ‐ गांव प्यासा है और अधिकारी नदारद, अब ये ढिलाई नहीं चलेगी।

बिलासपुर पंचायत में राशन कार्ड के बदले रिश्वत का मामला उजागर - ग्राम पंचायत बिलासपुर में राशनकार्ड बनवाने के लिए सेल्समेन द्वारा पैसे लेने की शिकायत मिलते ही मंत्री ने मौके पर ही संबंधित कर्मचारी को कड़ी चेतावनी दी। उन्होंने कहा, गरीबों से पैसा लेना बंद करें। यदि शिकायत दोबारा मिली, तो आपका लाइसेंस रद्द होगा और आप पर कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

पटवारी पर भी कसा शिकंजा - चौपाल के दौरान ग्रामीणों ने आरोप लगाया कि ग्राम पटवारी नामांतरण और फौती जैसे कार्यों के बदले अवैध रूप से पैसे की मांग करते हैं। मंत्री ने इस पर सख्त रुख अपनाते हुए तहसीलदार ओड़गी को तत्काल जांच कर कठोर कार्रवाई के निर्देश दिए।

भकुरा और माढ़र में भी लगी चौपाल, समस्याएं सुन त्वरित समाधान - जन चौपाल का कारवां ग्राम पंचायत भकुरा और माढ़र तक पहुँचा, जहाँ ग्रामीणों ने सड़क, राशन, आवास और पेंशन संबंधी समस्याएं रखीं। मंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि सभी शिकायतों का त्वरित निराकरण किया जाए और जिम्मेदारों की जवाबदेही तय हो।

विभागों को मिले स्पष्ट निर्देश, अधिकारी रहे मौजूद - चौपाल के दौरान जल संसाधन, वन, कृषि, स्वास्थ्य, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे। मंत्री ने सभी विभागों को चेतावनी दी कि ग्रामीण क्षेत्रों में किसी भी तरह की लापरवाही अब बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

जनप्रतिनिधियों की रही सक्रिय भागीदारी - इस जन संवाद कार्यक्रम में ज़िला पंचायत सदस्य बाबूलाल मरापो, जनपद सदस्य गीता सिंह, अनीता पैकरा, भानू कुशवाहा, मंडल अध्यक्ष सत्यनारायण पैकरा, पूर्व मंडल अध्यक्ष राजेश तिवारी व बलराम सोनी, समाजसेवी सत्या दुबे, सरपंच कंवल प्रसाद, उपसरपंच नारायण दत्त चितावन राजवाड़े छोटे लाल यादव सहित अनेक जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे। वहीं कार्यक्रम का संचालन प्रवीण गुर्जर ने किया।

संक्षिप्त समाचार

जिला चिकित्सालय सभा कक्ष में इंडियन रेडक्रॉस सोसायटी प्रबंध समिति की बैठक हुई संपन्न

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)-रेडक्रॉस सोसाइटी जिला शाखा सूरजपुर की प्रबंध समिति की बैठक चेयरमैन श्री बाबूलाल अग्रवाल के अध्यक्षता में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी कार्यालय सभा कक्ष में संपन्न हुई। बैठक में रेडक्रॉस सोसाइटी की विभिन्न गतिविधियों, प्रस्तावों और आगामी कार्य योजनाओं पर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। साथ ही संस्थान के कार्यों को और अधिक प्रभावी एवं जनकल्याणकारी बनाने हेतु सुझाव भी प्राप्त हुए। इस बैठक के दौरान चेयरमैन श्री बाबूलाल अग्रवाल जी, वाईस चेयरमैन श्री ओंकार पांडे जी, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ श्री कपिलदेव पैकरा जी, सिविल सर्जन डॉ श्री अजय मरकाम जी सहित प्रबन्ध समिति के सदस्यगण काफी संख्या में उपस्थित रहे।

जंगल गए युवक को लोनर हाथी ने सुलाया मौत की नींद

कोरबा(विश्व परिवार)। जीपीएम जिले के मरवाही वनमंडल से अचानक धमके एक लोनर हाथी ने आज पसान रेंज के एक गांव में तडके जंगल गए एक युवक पर हमला कर मौत की नींद सुला दिया। वन विभाग को घटना की जानकारी मिलने पर उसके अधिकारी व कर्मचारी मौके पर पहुंचकर आवश्यक कार्यवाही में जुट गए हैं। मृतक के परिजनों को विभाग की ओर से तत्कालिक सहायता राशि उपलब्ध करा दी गई है। जानकारी के अनुसार यह घटना पसान रेंज के कुम्हारीसानी गांव में आज तडके 4 बजे के लगभग घटित हुई। बताया जाता है कि गांव के छेरापारा निवासी रामदयाल पिता रामगोपाल गोंड़ उम्र 22 वर्ष दिशा-मैदान के लिए जंगल की ओर गया था, तभी उसका सामना खतरनाक लोनर हाथी से हो गया, जो मरवाही की सीमा को पार कर अचानक पहुंचा था। हाथी ने युवक को सामने देखकर उस पर हमला कर दिया और सूंड से उठाकर पटक दिया जिससे युवक के प्राण पखेरू उड़ गए। जंगल में घटित इस घटना की जानकारी लोगों को आज तब लगी जब वे सूर्योदय के बाद जंगल की ओर गए तो युवक को मृत अवस्था में पाया। घटना स्थल पर हाथी के पैरों के निशान थे। इसकी सूचना ग्रामीणों ने मृतक के परिवार वालों को दी जिस पर उसके परिजन वहां पहुंचे और वन विभाग को सूचित किया। परिजनों की सूचना पर वन विभाग के अधिकारी व कर्मचारी रेंजर रामनिवास दहायत के नेतृत्व में मौके पर पहुंचे और पंचनामा तैयार करने के साथ आवश्यक कार्यवाही की। तत्पश्चात् मृतक के शव को परिजनों को अंतिम संस्कार के लिए सौंप दिया। बताया जाता है कि लोनर हाथी ने कल मरवाही क्षेत्र में भी इसी तरह की घटना को अंजाम दिया था। कटघोरा डीएफओ कुमार निशांत ने बताया कि वन विभाग द्वारा मृतक के परिजनों को तत्कालिक सहायता राशि रुपए 25 हजार दे दी गई है। वन्य प्राणी के हमले में जनहानि पर शासन द्वारा 6 लाख रुपए क्षतिपूर्ति दिए जाने का प्रावधान है। शेष 5 लाख 75 हजार रुपए की राशि दस्तावेजी कार्यवाही के बाद दी जाएगी। युवक को मौत की नींद सुलाने वाला लोनर हाथी पसान व मरवाही रेंज की सीमा पर है। जिसकी निगरानी अमले द्वारा की जा रही है। ड्रोन कैमरे को भी रवाना कर दिया गया है।

फल दुकान में चोरी करने का कथित आरोपी गिरफ्तार

कोरबा(विश्व परिवार)। कोरबा जिला पुलिस अधीक्षक सिद्धार्थ तिवारीए अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक कोरबा नितिन ठाकुरए नगर पुलिस अधीक्षक कोरबा भुषण एक्का के मार्गदर्शन पर लगातार अवैध गतिविधियों पर कार्यवाही हेतु निर्देशित करने के परिपालन में थाना प्रभारी उरगा के नेतृत्व में उरगा पुलिस टीम के द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है। इसी कड़ी में 04ण11ण2024 को प्रार्थी लक्ष्मीकांत मिश्रा थाना उपस्थित आकर एक लिखित आवेदन पेश किया जिसमें उसके फल दुकान भैसमा मे रखे थैला मे से 1ए80ए000ध् रूपये को उसका नौकर जो उसके फल दुकान में काम करता थाए चोरी कर भाग गया हैं। उक्त रिपोर्ट के आधार पर अपराध धारा सदर कायम कर विवेचना मे लिया गया। विवेचना के दौरान संदेही प्रार्थी से पूछताछ करने पर अपने एफआईआर को ताईद कर कथन लेखबध्द किया गया। प्रकरण में चोरी गये 1ए80ए000ध् रूपये के संबंध में कथित आरोपी की पता तलाश हेतु मुखबीर तैनात किया गया था। मुखबीर से सूचना मिली कि वह अपने घर ग्राम बेंदरकोना आया हुआ है। उसको थाना तलब कर लाया गया।

दैनिक
विश्व परिवार

विचार-पक्ष

रायपुर सोमवार 05 मई 2025

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

संपादकीय प्राथमिक स्तर से ही अनिवार्य हो कृषि शिक्षा

भारत की राष्ट्रीय शक्ति की परीक्षा

भारत इस नतीजे पर है कि पहलगाम हमले को पाकिस्तान के संरक्षण में अंजाम दिया गया। इसलिए इस रास्ते से पाकिस्तान को हटने पर मजबूर करने से पहले रुख नरम ना किया जाए। यह भारत की राष्ट्रीय शक्ति की परीक्षा है। पहलगाम हमले के बाद भारत ने आतंकवादियों और उनके संरक्षकों को सख्त पैगाम देने के कदम उठाए हैं। मगर उनका असर तभी होगा, जब उनके जरिए आर-पार का परिणाम हासिल किया जाए। तात्पर्य यह कि चूंकि भारतीय जांचकर्ता इस नतीजे पर हैं कि आतंकवादी हमले को पाकिस्तान के संरक्षण में अंजाम दिया गया, तो उचित यह होगा कि इस रास्ते से पाकिस्तान को हटने पर मजबूर करने से पहले रुख नरम ना किया जाए। इस रूप में यह भारत की राष्ट्रीय शक्ति एवं संकल्प की परीक्षा है। अतीत के अनुभवों से स्पष्ट है कि प्रतीकात्मक कार्रवाइयों से भारत विरोधी आतंकवादी ढांचा खत्म नहीं किया जा सका। सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट हमले के बावजूद यह ढांचा बरकरार रहा और हर कुछ अंतराल पर भारत का खून बहाता रहा है, तो अब जरूरत उससे आगे बढ़ने की है। ठोस परिणाम हासिल करने के लिए जरूरी होगा कि भारत अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के दबाव में ना आए। अब तक की प्रतिक्रियाओं से साफ है कि अमेरिका ने फिलहाल इस मामले से खुद को अलग रखने का फैसला किया है। राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का यह कहना कि दोनों देश उनके करीबी हैं और वे 'इस मामले को खुद हल कर लेंगे', उनके प्रशासन की अंतरराष्ट्रीय विवादों में ना उलझने की नीति के अनुरूप है। अन्य हलकों से भी भारत को अधिक समर्थन मिलने की आशा नहीं है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पहलगाम संबंधी प्रस्ताव को अपने हक में नरम बनवा लेने में पाकिस्तान कामयाब रहा। इसमें उसे चीन का साथ मिला। मगर हैरतअंगेज यह है कि पश्चिमी देशों और रूस ने भी पाकिस्तान का नाम लेकर निंदा या भारत की जांच से सहयोग करने की बात को प्रस्ताव से हटाने का विरोध नहीं किया। ईरान, सऊदी अरब, और मिस्र मध्यस्थता की कोशिश कर रहे हैं, ताकि तनाव नियंत्रित हो सके। ये सारी बातें संकेत हैं कि भारत को अपनी राष्ट्रीय शक्ति पर ही भरोसा करना होगा। अच्छी बात है कि इस बारे में राष्ट्रीय राजनीति में पूरी आम सहमति दिखी है। इसलिए केंद्र को अब पाकिस्तान सामने राष्ट्रीय शक्ति के पूर्ण प्रदर्शन के लिए बेहिचक आगे बढ़ना चाहिए।

प्राथमिक स्तर से ही अनिवार्य हो कृषि शिक्षा

विकेश कुमार बडोला

मानविकी, वानिकी, कृषि इत्यादि जीवन से आवश्यक रूप में और सीधे जुड़े हुए क्षेत्रों में उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने की अरुचि विद्यार्थियों में आरंभ से ही रही है। कृषि शिक्षा को प्राथमिक स्तर से ही अनिवार्य करना चाहिए जीवन और जीवन के वास्तविक रूप शरीर व मन के स्वास्थ्य के लिए सर्वाधिक आवश्यक व अनुकूल पर्यावरण है। ऐसी अनुकूलता में भी सबसे महत्वपूर्ण है प्राकृतिक जल और भोजन। यह मानव को तब ही सहजता से उपलब्ध हो सकता है जब देश-विदेश में कृषि की समुचित व्यवस्था हो। इस लेख की प्रस्तावना का आशय यही है कि मनुष्य के जीवन में प्राकृतिक व पारंपरिक कृषि व्यवस्था अत्यंत अनिवार्य है। इस देश में राजनीतिक अकर्मण्यता, भ्रष्टाचार और आधुनिक विकास के तकनीकी, प्रौद्योगिकीय कोण पर ही केंद्रित रहने की शासकीय महत्वाकांक्षाओं ने उद्योगों को चहुंदिश प्रश्रय दिया और इसकी तुलना में कृषि क्षेत्र को उपेक्षित छोड़ दिया गया। खेती-किसानी की ऐसी उपेक्षा का प्रभाव भारतीय शिक्षा नीति पर भी पड़ा। फलत: प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के पाठ्यक्रमों में कृषि से संबंधित विषयवस्तु अदृश्य है। छोटी 'अ' से अमरूद और बड़ी 'आ' से आम के साथ आरंभ होने वाली प्राथमिक शिक्षा में कृषि के बारे में ज्यादा कुछ नहीं है। यदि बच्चों के मन-मस्तिष्क में छोटी आयु और शिक्षण-कक्षाओं से ही कृषि ज्ञान-विज्ञान नहीं डाला जाएगा तो आगे बड़ी कक्षाओं में जाने पर वे विषय संबंधी रुचियों में से कृषि विषय में आत्मरुचि कैसे प्रदर्शित करेंगे। कक्षा एक से लेकर बारहवीं तक पूरे बारह वर्षों की समयावधि में कक्षा-प्रति कक्षा जब उन्हें कृषि व इसके विभिन्न उपक्रमों के बारे में पढ़ाया-लिखाया जाएगा, व्यावहारिक शिक्षण-प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा और कृषि कार्यों के संबंध में आयोजित होने वाली विभिन्न कार्यशालाओं में जाने का अवसर उपलब्ध कराया जाएगा, तब ही तो वे कृषकीय कार्यों के बारे में अपेक्षित ज्ञान से संचित हो पाएंगे। ऐसा होने पर ही उनका मनोविज्ञान खेती के संपूर्ण साहित्य से सिंचित हो पाएगा। बच्चे यदि शुद्ध आहार-विहार अपनाने के प्रति जागरूक नहीं हैं तो इसका प्रमुख कारण यही है कि उन्हें बालपन से ही विद्यालयों में इस संबंध में शिक्षित नहीं किया गया। इसीलिए उन्हें कृषि वर्ग की प्रमुख फसलों, खाद्यान्नों,

फल-फूल, वन-वनस्पतियों, औषधियों के गुण-दोषों की जानकारी भी नहीं है और संभवत: यही कारण भी है कि वे खानपान की बुरी आदतों से ग्रस्त हैं। घर में या विद्यालयों में उन्हें इस संदर्भ में औपचारिक ढंग से ही बताया जाता है। अभिभावक, शिक्षक और नीति-नियंता ही जब कृषि क्षेत्र की उपेक्षा किए बैठे हों तो बच्चे इस बारे में अपेक्षानुरूप ज्ञान कैसे प्राप्त कर सकते हैं। यह अत्यंत विचारणीय है। देश के केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय से लेकर राज्यों के शिक्षा मंत्रालयों को इस दिशा में गंभीर होकर चिंतन-मनन करना ही होगा। इस काल के मनुष्य जीवन का दुर्भाग्य ही है कि उद्योगों, निर्माणियों, कारखानों, कार्यालयों और प्रगति संबंधी विभिन्न परियोजनाओं के लिए आए दिन वनक्षेत्र काटे जा रहे हैं। इसके लिए रोजाना ही कृषि क्षेत्र में कमी हो रही है। प्रकृति का असंतुलन कई दशकों से सार्वजनिक चिंता के केंद्र में है ही। प्राकृतिक असंतुलन के कारण जनजीवन प्रतिक्षण असुरक्षित होता जा रहा है। ऋतु की विकृतियां भयंकर रूप में सामने आ रही हैं। धरती, आकाश, जल, वायु, अग्नि, ये सभी तत्व हर दिन मलिन हो रहे हैं। परिणामस्वरूप धरती का फसल-चक्र बिगड़ चुका है। फसलों की प्राकृतिक शक्ति लगभग समाप्त ही हो चुकी है। खाद्यान्न उत्पादन पूरी तरह कृत्रिम, रसायनमिश्रित और विषैले उर्वरकों व खाद पर निर्भर हो चुका है। पारंपरिक और नैसर्गिक खाद्यान्न-बीज विलुप्त होने की कगार पर हैं। ग्राम, ग्राम्य जीवन, ग्रामीण व्यवस्थाओं का समापन अंतिम स्तर पर है। सार्वजनिक चेतनहीनता के इस कालखंड में पूरी तरह सिद्ध हो चुका है कि विज्ञान केवल और केवल अभिशाप बनकर मनुष्य के सिर पर मंडरा रहा है। चारों ओर आधुनिक जीवन द्वारा उत्पन्न की गईं समस्याओं, रोगों और महामारियों की असुरक्षा फैली हुई है। जीवन का स्वाभाविक आनंद क्या होता है, इससे मनुष्य अनभिज्ञ है। हरेक खाद्य और पेय पदार्थ शरीर का पोषण करने के बजाय उसे असाध्य रोगों से खत्म कर रहा है। देश में जितने भी कृषि विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय और अन्य शिक्षण-प्रशिक्षण संस्थान हैं, हालांकि उनमें कृषिगत विषयों का पठन-पाठन तो हो रहा है और यथासंभव प्रायोगिक प्रशिक्षण भी हो रहे हैं, पर वे कहीं न कहीं प्राकृतिक तत्वज्ञान से रहित हैं। ऐसे पठन-पाठन में कृषि क्षेत्र के उत्थान के लिए येन-केन-प्रकारेण कृत्रिम कृषिकर्म की ही जानकारी दी जा रही है। बीज, खाद और फसलों के रक्षण-संरक्षण और उत्पादन के लिए रासायनिक पदार्थों का सहारा लिया ही लिया जा रहा है। कृषि संस्थानों, प्रतिष्ठानों और उद्यमों में बीजों पर प्रयोग का जैसा अभ्यास कुछ दशकों से किया जा रहा है, उससे कृषि उत्पादों में कोई न कोई हानिकारक तत्व स्थायी रूप में पहुंच रहा है। चूंकि यह प्रक्रिया वर्षों पुरानी हो चुकी है और कृषि से जुड़े हरेक व्यक्ति को इसमें अधिक शारीरिक व मानसिक श्रम नहीं करना पड़ता, इसलिए इसमें उत्पाद को पूर्णत: हानिरहित करने के नवीन प्रयास नहीं किए जा रहे हैं। आखिर में इसके अप्रत्याशित दुष्परिणाम मनुष्य की काया ही झेल रही है। इसके अलावा जो व्यापारी गांवों, नगरों-महानगरों के असंगठित क्षेत्रों में मिलावटी और जहरीला अनाज बेच रहे हैं और जितने बड़े व व्यापक स्तर पर, जितनी ज्यादा आबादी को बेच रहे हैं, मिलावटी अनाज और अनाज में प्रयोग होने वाले प्राणघाती अवैध रसायनों का कारोबार भी उसी मात्रा में बढ़ रहा है। ऐसी मानव विरोधी व्यापारिक, औद्योगिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाने व इनका नियंत्रण करने के बजाय सरकारें मिलावटी अनाज खाकर स्थायी रूप में बीमार रहने वाले लोगों का इलाज करने की आड़ में बेहिसाब प्राइवेट हॉस्पिटलों को खोलने की मुहिम भी चलाए हुई हैं। बचपन से बच्चों को कृषि शिक्षा से वंचित रखकर, बड़े होकर उन्हें मिलावटी अनाज पर निर्भर करके और आखिर में जहरीले खाने-पीने के बाद क्षतिग्रस्त अंगों के इलाज के लिए उन्हें निजी अस्पतालों की मनमर्जी पर छोड़कर किस तरह की सरकारी जिम्मेदारी निभाई जा रही है, यह सवाल देश के हरेक संवेदनशील व्यक्ति को भीतर-बाहर बुरी तरह कचोट रहा है। देश, समाज और घर-परिवारों में जो तरह-तरह की बुराइयां, समस्याएं व विसंगतियां पनपी हैं और तेजी से पनप रही हैं, उनका प्रमुख कारक यही परिस्थिति है। जब मनुष्य का तन-मन अप्राकृतिक व कृत्रिम अनाज खाकर और अशुद्ध जलपान करके अस्वस्थ होगा, तो समाज-परिवार में दुर्गुणों से युक्त आचार-व्यवहार ही पनपेगा व फैलेगा। सरकारों को ऐसी मानव विरोधी, अस्वास्थ्यकर और जीवनघाती परिस्थिति को खत्म करने के लिए जो जरूरी कदम उठाने हैं, उनकी शुरूआत प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में प्रकृति, पर्यावरण व कृषि कार्यों से संबंधित विषयों की बढ़ोतरी करके करनी होगी। प्रतिवर्ष बारहवीं परीक्षा उत्तीर्ण कर भविष्य की ओर देखने वाले अधिसंख्य विद्यार्थी तकनीकी, प्रौद्योगिकी और यांत्रिकी जैसे क्षेत्रों के शिक्षण-प्रशिक्षण के लिए ही कॉलेजों में प्रवेश ले रहे हैं। मानविकी, वानिकी, कृषि इत्यादि जीवन से आवश्यक रूप में और सीधे जुड़े हुए क्षेत्रों में उच्चतर शिक्षा प्राप्त करने की अरुचि विद्यार्थियों में आरंभ से ही रही है। इस स्थिति में कर्ताधर्ताओं, शिक्षकों, अभिभावकों और देश-दुनिया के विद्वानों की मानसिक-वैचारिक अपरिपक्वता का ही संकेत मिल रहा है कि वे वास्तव में अपनी भावी पीढ़ियों के लिए कर क्या रहे हैं और जो उन्हें करना चाहिए वैसा वे बिल्कुल नहीं कर रहे हैं। जिस खाद्यान्न, जल, पर्यावरण पर मनुष्य की श्वासें, प्राण व संपूर्ण जीवन आश्रित है, उसी से संबंधित वानिकी और कृषकीय शिक्षा की दिनोंदिन उपेक्षा हो रही है।

आलेख

मोदी के बदले के बयान में नेतन्याहू के मौजूद साक्षात उदाहरण

हरिशंकर व्यास

प्रधानमंत्री मोदी अंग्रेजी में बोले! वह भी बिहार की जनसभा में! कहा, 'हम उन्हें धरती के अंतिम छोर तक खदेड़ेंगे। पहलगाम के दोषियों को मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है। आतंकियों को कल्पना से भी बड़ी सजा मिलकर रहेगी'। सवाल है पहलगाम की आंतकी घटना के दोषी कौन हैं? पुलिस ने जिन तीन आतंकवादियों के फोटो जारी किए हैं उनको खोजना, मारना, मिट्टी में मिलाने का काम वह सजा नहीं हो सकती है, जिस पर प्रधानमंत्री कहे कि उन्हें कल्पना से भी बड़ी सजा मिलेगी। आतंकी तो मौत की तैयारी के निश्चय से ही बनता है। असल बाद आतंकवाद को मिट्टी में मिलाने की है। और उसका हाल-फिलहाल ठोस उदाहरण इजराइल के नेतन्याहू देते हुए हैं। यहूदियों के साथ हमास के आतंकियों ने जो किया वह जगजाहिर है। उसके अधिक भयावह वारदात पहलगाम में मासूम पर्यटक हिंदुओं पर आतंकियों की बेरहमी थी। देश हिला और पूरी दुनिया भारत के साथ खड़ी है। भारत ने पहलगाम के दोषियों में सीधे तौर पर पाकिस्तान पर न केवल ऊंगली उठाई है, बल्कि उसके खिलाफ फैसले किए हैं। सो, दुनिया को साफ बता दिया कि पाकिस्तान दोषी है। स्वाभाविक है कि उसे वैसा ही सबक सीखना मोदी की कसम है, जैसे इजराइल के नेतन्याहू ने गाजा को मिट्टी में मिलाया है। आतंकियों के पैरोकार ईरान, लेबनान, यमन, सीरिया पर भी ढेरों मिसाइलें दागीं। हां, इस हवाबाजी का जीरो अर्थ है कि सिंधु जल संधि स्थगित करने से पाकिस्तान प्यासा मर जाएगा। उसकी सेहत पर इसलिए असर नहीं होना है क्योंकि भारत ने पानी रोकने याकि उसके संग्रह के लिए बांध, बैराज नहीं बनाए हुए हैं। भारत ने तुरंत पाकिस्तान को लक्षित करके जो भी कदम उठाए है उससे पाकिस्तान पर असर नहीं होना है। उलटे भारत को भी आर्थिक नुकसान होगा। असल बात प्रधानमंत्री मोदी के मुंह से निकले ये वाक्य हैं कि, 'धरती के अंतिम छोर तक खदेड़ेंगे। पहलगाम के दोषियों को मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है'। इसका अर्थ है नेतन्याहू जैसी या उससे भी बड़ी बदले की कार्रवाई। आंतकवाद के खिलाफ जंग में पहले अमेरिका ने (9/11 के बाद) और हाल में दो वर्षों से इजराइल के नेतन्याहू ने प्रतिमान बनाया है। बुश और नेतन्याहू से भी ज्यादा भारी जुमला प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बिहार की जनसभा में कहा है। क्या यह कहना बिहार के आगामी चुनाव में लोगों के वोट लेने के लिए है या सचमुच आतंकवाद की जड़ पाकिस्तान को मिट्टी में मिला देने या उसे हैसियत दिखाने की कसम है? गीदड़भभकी है, थोथा चना बाजे घना है या नेतन्याहू की तरह सैनिक अभियान का बिगुल है? गड़बड़ यह है कि बदला और खासकर देश की आन, बान शान से जुड़ी बदले की कार्रवाई का इरादा जनसभा में जाहिर नहीं होना चाहिए। हिसाब से भारत के लिए आदर्श स्थितियां हैं। दुनिया का कोई देश आज पाकिस्तान के साथ नहीं है। अमेरिका से चीन को जैसी परेशानी है उसमें वह भारत के खिलाफ नहीं जा सकता। पहलगाम की आतंकी घटना का बदला लेने की भारत की कार्रवाई में अमेरिका, रूस, यूरोपीय संघ, जापान आदि सभी देश भारत के साथ मौन रहेंगे। बावजूद इसके पाकिस्तान एटमी हथियारों से लैस तो है। दुनिया चिंता तो करेगी। हमास, लेबनान, ईरान आदि से बदला लेने की इजराइल की ग्राउंड रियलिटी में बहुत कुछ अलग है। जबकि पाकिस्तान का मसला अलग तरह का है। इसलिए लाख टके का सवाल है कि प्रधानमंत्री मोदी ने 'मिट्टी में मिलाने का समय आ गया है' का जुमला क्या हिसाब लगा कर बोला? क्या सेना भेजकर पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को लेने का लक्ष्य है ताकि वहां से ऑपरेट करने वाले आतंकियों का झंझट हमेशा के लिए खत्म हो? ऐसे ही नेतन्याहू ने सोच कर हमास के मददगार इलाकों पर सैनिक हमले किए। हाल में पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को ले सरकार के कई मंत्रियों के बयान आए है। तो क्या पीओके पर कब्जे से भारत का बदला लेना पूरा होगा?

राष्ट्रवाद की धारणा बिहार चुनाव को प्रभावित करेगी

अजीत द्विवेदी

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में पर्यटकों की हत्या के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहली जनसभा बिहार में हुई, जहां इस साल के अंत में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं। इसको लेकर सोशल मीडिया में प्रधानमंत्री की खूब आलोचना हो रही है और एक दुखद घटना का राजनीतिक इस्तेमाल करने के आरोप भी लग रहे हैं। इस सिलसिले में सवाल उठाने वाली एक लोक गायिका के ऊपर उत्तर प्रदेश में मुकदमा भी हो गया है। सवाल है कि क्या यह घटना और इसके तुरंत बाद बिहार की धरती से प्रधानमंत्री का आतंकवादियों को कल्पनातीत सजा देने के ऐलान का बिहार के चुनाव में भाजपा और एनडीए को लाभ होगा? इस बारे में अभी कुछ नहीं कहा जा सकता है लेकिन इतना तय है कि यह घटना चुनाव को कई तरह से प्रभावित करेगी। पहलगाम कांड और उस पर संभावित प्रतिक्रिया से राष्ट्रवाद और देशभक्ति की जो भावना पैदा होगी वह लोगों के मतदान व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। हो सकता है कि पुलवामा के बाद हुए लोकसभा चुनाव जैसी सुनामी नहीं आए फिर भी राष्ट्रवाद की धारणा चुनाव को प्रभावित करेगी। असल में बिहार में विधानसभा चुनाव के दौरान सांप्रदायिक ध्रुवीकरण का एजेंडा वैसे काम नहीं करता है, जैसे लोकसभा चुनाव में करता है। विधानसभा चुनाव में धर्म या सांप्रदायिकता का एजेंडा विफल ही साबित होता है। भाजपा 2015 में इसे आजमा चुकी है। विधानसभा चुनाव में जाति का समीकरण ज्यादा कारगर होता है। तभी सवाल है कि धर्म या सांप्रदायिकता की तरह क्या राष्ट्रवाद का मुद्दा भी काम नहीं करेगा? क्या देशभक्ति का मुद्दा भी लोगों को एनडीए के पक्ष में एकजुट होने के लिए मजबूर नहीं करेगा? यह बड़ा सवाल है। इस पर बिहार चुनाव का बहुत कुछ निर्भर करेगा। प्रधानमंत्री की मधुबनी की 24 अप्रैल की जनसभा को इस नजरिए से देखने की जरुरत है। उन्होंने अपनी सभा में कोई हिंदू-मुस्लिम वाली बात नहीं कही। सबको पता है कि पहलगाम में आतंकवादियों ने लोगों से धर्म पूछ कर उनको गोली मारी। लोगों को कलमा पढ़ने को कहा गया और जो नहीं पढ़ पाया उसे गोली मार दी गई। लेकिन प्रधानमंत्री ने जान बूझकर इसका जिक्र नहीं किया। पता नहीं आगे क्या होगा? हो सकता है कि आगे धर्म के आधार पर हत्या का जिक्र किया जाए लेकिन पहली सभा में प्रधानमंत्री का भाषण राष्ट्रवाद और देशभक्ति पर केंद्रित रहा। उन्होंने पहलगाम की घटना को देश की आत्मा पर हमला बताया और संकल्प किया कि घटना को अंजाम देने वालों को ऐसी सजा मिलेगी, जिसकी उन्होंने कल्पना नहीं की होगी। अब आने वाले दिनों में आतंकवादियों के खिलाफ और पाकिस्तान के खिलाफ जो भी कार्रवाई होगी उसका जिक्र बिहार के संदर्भ के बगैर नहीं होगा। यह कहा जाएगा और खासतौर से बिहार के लोगों को याद दिलाया जाएगा कि प्रधानमंत्री ने बिहार की धरती पर ही संकल्प किया था कि आतंकवाद को मिटा देंगे। यह अपने आप बिहार के लोगों में गर्व की भावना भरने वाली बात होगी। उनकी नसों राष्ट्रवाद का उफान भरने वाली होगी। इसके साथ धर्म का मामला स्वाभाविक रूप से जुड़ेगा। वह एक अंतर्धारा की तरह होगा। जितना प्रत्यक्ष अभी है उतना नहीं होगा। अभी खुल कर यह बात कही जा रही है कि आतंकवादियों ने धर्म पूछ कर लोगों की हत्या की। इस आधार पर कहा जा रहा है कि अब यह धारणा टूट गई कि आतंकवाद का धर्म नहीं होता है। आतंकवाद का धर्म होता है और वह हिंदू विरोधी है। गौरतलब है कि पहलगाम की घटना के तुरंत बाद राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के मुखपत्र 'पांचजन्य' की ओर से सोशल मीडिया में पोस्ट डाली गई कि, 'उन्होंने धर्म पूछा जाति नहीं'। इसका मतलब है कि जाति नहीं धर्म पर ध्यान देने की जरुरत है। उधर बिहार में सभी पार्टियां अपना अपना जातिगत समीकरण बैठाने में लगी हैं। ऐसे में अचानक यह नैरेटिव बने कि जाति नहीं धर्म महत्वपूर्ण है और धर्म सिर्फ पहचान के लिए नहीं, बल्कि जीवन के लिए सबसे अहम तत्व है, तो क्या होगा? जाति तोड़ने के लिए धर्म की इस अंतर्धारा के ऊपर राष्ट्रवाद का मुलम्मा चढ़ा होगा, जो चुनाव को प्रभावित करेगा। ध्यान रहे बिहार में महिलाएं नीतीश कुमार का समर्थन करती रही हैं। अगर वे बदलना चाह रही होंगी तब भी पहलगाम में नवविवाहित महिलाओं के सामने उनके पतियों को गोली मारने की घटना उनके ऊपर असर डाल सकती है। यह भी सवाल है कि क्या धर्म और राष्ट्रवाद की धारणा इतनी प्रबल होगी कि वह 20 साल के नीतीश कुमार के राज के खिलाफ पैदा एंटी इन्कम्बैंसी को समाप्त कर देगी? लोग भूल जाएंगे कि बिहार में सबसे ज्यादा बेरोजगारी है? बिहार विकास के हर पैमाने पर सबसे नीचे है? टिकाऊ विकास के सारे लक्ष्यों में बिहार सबसे नीचे है? सबसे ज्यादा अशिक्षा, गरीबी और पलायन बिहार में है? लोग क्या यह भी भूल जाएंगे कि नीतीश कुमार की मानसिक अवस्था अब शासन संभालने वाला नहीं रह गई है? प्रशांत किशोर ने बड़ी मेहनत से लोगों को मन में यह बात बैठाई है कि बिहार को बदलाव की जरुरत है। क्या लोग बदलाव की जरुरत को भूल जाएंगे? पता नहीं! इस समय इन सवालों का जवाब मुश्किल है। लेकिन इतना तय है कि प्रशांत किशोर और तेजस्वी यादव दोनों के लिए पहलगाम की घटना से नई चुनौतियां पैदा हो गई हैं। ये दोनों एनडीए के वोट आधार में सेंध लगाने की कोशिश कर रहे हैं। अगर बिहार और बिहारियों के जीवन से जुड़े मुद्दे राष्ट्रवाद, देशभक्ति और धार्मिक ध्रुवीकरण के एजेंडे से ढक जाते हैं तो प्रशांत किशोर के लिए ज्यादा मुश्किल होगी क्योंकि उनके पास कोई जातीय समीकरण नहीं है। वे बदलाव की आकांक्षा रखने वाले वर्ग के सहारे राजनीतिक सफलता की उम्मीद कर रहे हैं। इसके अलावा उनकी उम्मीद एनडीए खास कर जनता दल यू के वोट से भी जुड़ी हैं, जिनके बारे में माना जा रहा है कि नीतीश की सेहत बिगड़ने और उनके हाशिए में जाने से उस वोट का एक बड़ा हिस्सा प्रशांत किशोर की ओर जा सकता है। पिछले दिनों सी वोटर के सर्वे में भी दिखा कि नीतीश कुमार की लोकप्रियता 18 से घट कर 15 हुई तो प्रशांत किशोर की 15 से बढ़ कर 17 फीसदी हो गई।

युद्ध के लिए क्यों उकसा रहा पाकिस्तान

राकेश शर्मा

युद्ध किसी भी देश की तरक्की में बहुत बड़ा रोड़ा सिद्ध होते हैं। इसलिए दुश्मन की चाल और उसकी मानसिकता को समझते हुए इस बार ऐसा जवाब दिया जाना चाहिए जिससे दोबारा से पाकिस्तान अपनी गर्दन उठाने की हिम्मत न कर पाए। सिंधु जल समझौते को रद्द करना पाकिस्तान के लिए बहुत बड़ी मुसीबत बन सकता है। यह कूटनीतिक पहल पाकिस्तान को घुटनों के बल ला सकती है, भले ही इसके लिए बहुत अधिक समय लगेगा, लेकिन इसके परिणाम पाकिस्तान के लिए अत्यंत भयानक सिद्ध होंगे। इस तरह के कूटनीतिक निर्णयों से पाकिस्तान को बिना युद्ध के ही घुटनों के बल लाया जा सकता है पहलगाम में हुई नरसंहार की घटना निहायत ही कायरतापूर्ण और अति निंदनीय है। अपने परिवारों के साथ प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेने धरती के स्वर्ग कहे जाने वाले कश्मीर में पहुंचे पर्यटकों पर हमला करके उनको मौत के घाट उतारना उन हमलावरों और उनके आकाओं की वहशी, अमानवीय और घृणित मानसिकता को साफ-साफ प्रदर्शित करता है। इस हमले में हिंदू पुरुषों को जिस प्रकार चुन चुन कर उनके परिवारों के सामने निशाना बनाया गया और उनके हिंदू होने की पहचान के लिए जिस तरह के हथकंडे अपनाए गए, वो बहुत ही निम्न स्तरीय और मानवता को शर्मसार करने वाले हैं। जिस प्रकार से हमलावरों ने पर्यटकों पर हमले से पहले उनके धर्म पूछे, कलमा पढने को कहा और उनके कपड़े उतरवाकर उनकी पहचान स्थापित करने की कोशिश की उससे इस बात की तस्दीक हो जाती है कि हमलावर एक निश्चित योजना के अनुसार हमला कर रहे थे और वे किसी तरह की जल्दबाजी में भी नहीं थे। उनको इस बात का भी पूरा ज्ञान था कि उन्होंने हमारे देश के खुफिया तंत्र की आंखों में धूल झोंक दी है और इस बात के प्रति भी आश्वस्त थे कि इस वक्त कोई उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकता। आतंकी अपनी योजना को अक्षरश: पूरा करने में कामयाब भी रहे हैं। यह आतंकी हमला देश की सुरक्षा व्यवस्था पर तो प्रश्नचिन्ह लगता ही है, साथ ही साथ देश के खुफिया तंत्र की नाकामयाबी की पोल भी खोलता है। इस आतंकी हमले में न केवल मासूम और निर्दोष पर्यटकों की जान ली गई, बल्कि वहां पर मौजूद जिंदा बचे लोगों के दिलों में दहशत डालकर इस दहशत को देश में फैलाने और सरकार को उकसाने का काम भी किया गया है। अमूमन किसी भी तरह के हमले में

हमलावरों की मानसिकता ज्यादा से ज्यादा लोगों को हताहत करने और ज्यादा लोगों को मारकर दहशत का माहौल बनाने की होती है, लेकिन यह हमला जो सवाल खड़े करता है उनके बारे में सभी को गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है। इस हमले में बच्चों और महिलाओं को निशाना बनाने की बजाय उनके दिलों में दहशत डालकर छोड़ दिया गया ताकि उनके द्वारा यह दहशत पूरे देश में फैलाई जाए। ऐसा प्रतीत होता है कि इस आतंकी हमले का एक उद्देश्य देश में धार्मिक उन्माद को बढ़ा कर देश को कमजोर करने का प्रयास भी है। यह हमला युद्ध के लिए उकसाने का प्रयत्न भी है। अब प्रश्न यह भी है कि आखिर हमलवार या उनका आका पाकिस्तान इस तरह का संदेश क्यों देना चाहता है? क्या यह पाकिस्तान का अति आत्मविश्वास है या इसके पीछे भी कोई चाल है? इस हमले के बाद पूरे देश में गुस्सा है और हर देशवासी सरकार से उम्मीद लगाए बैठा है कि सरकार को इस हमले का बदला लेने के लिए किसी भी हद तक चले जाना चाहिए और भले ही इसके लिए भारत और पाकिस्तान में युद्ध की नौबत क्यों न आ जाए। भारत में इस समय हिंदू पक्षधर सरकार है, यह बात पाकिस्तान में बैठे हमलावरों के आका भी जानते हैं और हिंदुओं की रक्षा के लिए प्रतिबद्ध इस सरकार के लिए युद्ध का निर्णय लेना कोई कठिन कार्य भी नहीं है, यह भी जगजाहिर है। लेकिन क्या सरकार वही करने जा रही है जो दुश्मन करवाना चाहता है? और क्या हम वैसे ही रिएक्ट कर रहे हैं, जैसा हमलावरों ने सोचा था? इन कुछ प्रश्नों पर गंभीरता से सोचने की जरूरत है। पाकिस्तान जैसे आतंक को पोषण देने वाले देश के खिलाफ कार्रवाई के लिए वैसे तो किसी आतंकी हमले का इंतजार करने की जरूरत नहीं है। इससे पहले भारत 1965 और 1971 में पाकिस्तान को युद्ध में धूल चटा चुका है लेकिन पाकिस्तान फिर भी अपनी हरकतों से बाज नहीं आया और उसने 1999 में फिर से कारगिल में अपनी औकात दिखा दी और उस युद्ध में भी पाकिस्तान को मुंह की खानी पड़ी थी। इस बार भी अगर युद्ध होता है तो भारत की सेनाओं के पराक्रम के आगे पाकिस्तान कहीं भी ठहर नहीं पाएगा। लेकिन सोचने बाली बात यह है कि क्या यह युद्ध आखिरी युद्ध होगा या इसके बाद फिर से कुछ सालों के बाद इसी प्रकार के हालात से जूझते हुए भारत को ऐसी ही लड़ाई लडनी पड़ेगी। हमारे देश की तरक्की और विकास की रफ्तार से कुछ पड़ोसी मुल्कों को बहुत अधिक तकलीफहै और अब उनको लगता है कि अगर भारत को विकास के रास्ते से हटाकर पीछे करना है तो इसका एकमात्र हथियार युद्ध है। युद्ध किसी भी देश की तरक्की में बहुत बड़ा रोड़ा सिद्ध होते हैं। इसलिए दुश्मन की चाल और उसकी

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, सोमवार 05 मई 2025
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

सुमति धाम, इन्दौर में पट्टाचार्य कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न

इंदौर (विश्व परिवार)। इंदौर स्थित सुमति धाम में आयोजित पट्टाचार्य पदारोहण समारोह 27 अप्रैल से 2 मई 2025 तक अत्यंत भव्यता एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम हर दृष्टि से अद्वितीय रहा-व्यवस्थाओं की शुचिता, आयोजन की गरिमा और जनमानस के उत्साह ने इसे अविस्मरणीय बना दिया। हर किसी की जुबान पर एक ही बात थी-ऐसा आनंद आया, जिसे शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।

कार्यक्रम की प्रमुख विशेषताएँ- इस आयोजन की सफलता का श्रेय जाता है मुख्य आयोजक आदरणीय श्री मनीष गोधा एवं श्रीमती सपना गोधा को, जिनकी सतत निष्ठा, अनुशासन और समर्पण ने इस आयोजन को उत्कृष्टता की ऊँचाइयों तक पहुँचाया।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था 30 अप्रैल को आचार्य श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का पट्टाचार्य पद पर विधिवत् सुशोभन। इस अवसर पर उपस्थित सभी आचार्य एवं मुनिराजों को संबोधन हेतु केवल पाँच मिनट का समय प्रदान किया गया। आश्चर्यजनक रूप से सभी ने इस अनुशासन का पालन करते हुए अपनी बातें संक्षेप में और सारगर्भित रूप से रखीं।

केवल एक विशेष मुनिराज को थोड़ा अधिक समय प्रदान किया गया क्योंकि उन्होंने अपने गुरु समाधिस्थ आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के अंतिम क्षणों का प्रत्यक्ष अनुभव साझा किया, जो श्रोताओं को गहराई तक छू गया।

विलक्षण व्यवस्थाएँ- सुमति धाम में हुई व्यवस्थाएँ अतुलनीय थीं- प्रात: 7 बजे से नाश्ता, दोपहर 10 बजे से सुस्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था। दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं के लिए विशाल भोजनशाला, जहाँ बिना भीड़ और धक्का-मुक्की के सभी को भोजन मिला। भोजन में हर आयु वर्ग के लिए विशेष ध्यान रखा गया-बच्चों, युवाओं एवं वृद्धजनों के लिए अलग-अलग प्रकार के व्यंजन उपलब्ध थे। दिनभर चाय, कॉफी आदि की सुविधा बनी रही। 400 साधुओं के लिए 400 पृथक चौंकों की व्यवस्था की गई, जिसमें एक चौके में केवल एक साधु के आहार की अनुमति थी। आयोजन के प्रथम दिन एक छोटी चूक के लिए आयोजिका श्रीमती सपना गोधा ने सार्वजनिक रूप से क्षमा माँगकर संयम और विनम्रता का परिचय दिया।

प्रबंध व्यवस्था की उत्कृष्टता- गर्म मौसम के बावजूद विशाल पांडाल में एयर कंडीशनर की पर्याप्त व्यवस्था थी। सम्पूर्ण भूमि पर कालीन बिछाए गए जिससे श्रद्धालुओं के पाँव गर्मी से सुरक्षित रहें। साधुओं और आगंतुकों के लिए आवासीय व्यवस्था इतनी भव्य थी कि हर कोई प्रशंसा करता दिखा। विशेष बात यह रही कि कार्यक्रम पूर्णत: निशुल्क था। न कहीं कोई चंदा, न रसीद, न दान पेटी-सच्चे अर्थों में सेवा और भक्ति का उदाहरण। सभी साधुओं और चौका लगाने वालों को दूध, सब्जी, अन्य आवश्यक सामग्री समय पर उपलब्ध कराई गई।

एक आदर्श आयोजन- कार्यक्रम में विघ्न संतोषी प्रवृत्तियों पर सतर्क निगरानी रखी गई, जिससे संपूर्ण आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हो सका। श्रद्धालुओं ने कहा-हमने जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक पाया। सचमुच, ऐसा भव्य और अनुकरणीय कार्यक्रम वर्षों तक स्मरणीय रहेगा। इस एतिहासिक सफलतम कार्यक्रम के लिए श्री मनीष जी श्रीमति सपना जी गोधा को सुमती धाम गुरु भक्त परिवार को बहुत बहुत शुभकामनाएं एवं बधाई एवं आप सभी के पुण्य की बहुत बहुत अनुमोदना।

-नरेंद्र कुमार जैन
गुरुकृपा परिवार, रायपुर

भक्ति, विनम्रता और आत्मीयता का संगम

पूरे आयोजन में श्री मनीष गोधा एवं श्रीमती सपना गोधा की उपस्थिति एक प्रेरणा बनी रही। वे मंच पर नृत्य करते हुए, आनंद से झूमते हुए देखे गए। उनका सम्पूर्ण परिवार-माता सहित-इस समारोह की शोभा बना रहा। इतनी विशाल व्यवस्था के बीच उन्होंने कभी भी घमंड नहीं दिखाया। हर किसी से आत्मीयता से मिलना, विनम्रता से बात करना-यह उनके स्वभाव की सरलता का परिचायक था।

प्रखर पत्रकार, समाजसेवी एवं धर्मप्रेमी कीर्ति शेष श्री प्रवीण कुमार जैन की प्रथम पुण्यतिथि पर संगोष्ठी का आयोजन

'नवीन तकनीकी के दौर में पत्रकारिता' विषय पर होगा विशेष विमर्श

झांसी (विश्व परिवार)। बुंदेलखंड की पत्रकारिता, समाज सेवा और धर्म क्षेत्र में अपने अतुलनीय योगदान के लिए स्मरणीय कीर्तिशेष श्री प्रवीण कुमार जैन की प्रथम पुण्यतिथि के अवसर पर सोमवार, 5 मई 2025 को श्री गणेश शंकर विद्यार्थी पत्रकारिता उन्नयन समिति एवं दैनिक विश्व परिवार झांसी एवं रायपुर परिवार के संयुक्त तत्वावधान में एक विशेष सभा एवं संगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

यह कार्यक्रम राजकीय संग्रहालय सभागार, निकट महारानी लक्ष्मीबाई पार्क, झांसी में अपराह्न 2:30 बजे से आरंभ होगा।

कार्यक्रम का मुख्य विषय 'नवीन तकनीकी के दौर में पत्रकारिता' रहेगा, जिसमें देश की जानी-मानी पत्रकार शख्सियतें अपने विचार साझा करेंगी।

मुख्य वक्ता के रूप में श्री अरविंद कुमार सिंह, पूर्व संपादक, राज्यसभा टीवी, भारतीय संसद, नई दिल्ली एवं डा. सुमन गुप्ता संपादक जन मोर्चा, तथा पूर्व सदस्य शप्रेस काउंसिल ऑफ इंडिया, भारत गणराज्य लखनऊ आमंत्रित हैं। यह संगोष्ठी आज की पत्रकारिता की बदलती दिशा व तकनीकी हस्तक्षेप पर एक महत्वपूर्ण विमर्श का मंच बनेगी।

प्रवीण कुमार जैन: पत्रकारिता से धर्म और समाज सेवा तक का प्रेरणास्पद सफर : प्रवीण कुमार जैन ने पत्रकारिता की विधिवत शिक्षा आईआईएम दिल्ली से प्राप्त की और अपने संपूर्ण जीवन को निष्कलंक पत्रकारिता एवं सामाजिक सेवा को समर्पित कर दिया। वे दैनिक विश्व परिवार, झांसी के संपादक के रूप में वर्षों तक सक्रिय रहे तथा पत्रकारिता में नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणास्रोत बने।

वे पत्रकार भवन झांसी के अध्यक्ष भी रहे, जहाँ उन्होंने पत्रकारों के अधिकार, कल्याण एवं पत्रकारिता के उच्च मानकों के संरक्षण हेतु महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सामाजिक क्षेत्र में वे बुंदेलखंड के एक अग्रणी समाजसेवी के रूप में विख्यात रहे। उन्होंने सामाजिक उत्थान, निर्धन सेवा, जनहित कार्यों और धार्मिक आयोजनों में सक्रिय भागीदारी निभाई। उनका जीवन सादा किन्तु उद्देश्यपूर्ण था।

धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर में योगदान- धर्म के क्षेत्र में उनका योगदान अत्यंत विशेष था। मेडिकल कॉलेज के सामने स्थित अतिशय क्षेत्र करगुंवा जी में भगवान पार्श्वनाथ स्वामी का श्वेत मार्बल से निर्मित भव्य जिनालय उनकी दूरदृष्टि, निष्ठा एवं आस्था का साक्षात प्रमाण है। यह जिनालय बुंदेलखंड में अपने प्रकार का पहला और अत्यंत दर्शनीय तीर्थ स्थल बन चुका है।

प्रशासनिक एवं राष्ट्रीय मंचों पर सक्रियता- प्रशासनिक एवं राष्ट्रीय संस्थाओं में भी उनकी भागीदारी उल्लेखनीय रही। वे भारत सरकार के अल्पसंख्यक शैक्षणिक संस्था आयोग के कोऑर्डिनेटर सहित उत्तरांचल तीर्थ क्षेत्र कमेटी एवं बुंदेलखंड प्रेस वेलफ़ेयर सोसाइटी के महामंत्री, सर्वधर्म सद्भाव समिति, एवं जिला प्रशासन की विविध समितियों में सक्रिय रहे।

उनका आकस्मिक निधन वर्ष 2024 में हुआ, जिसने झांसी सहित पूरे बुंदेलखंड को गहरे शोक में डुबो दिया। उनके निधन से समाज ने एक सच्चे सेवक, चिंतक और मार्गदर्शक को खो दिया।

इस पुण्य स्मृति दिवस पर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु समस्त समाज, पत्रकार बंधु, बौद्धिक वर्ग एवं धर्मप्रेमी जनों से इस संगोष्ठी में सादर उपस्थिति की अपील की गई है।

अरुचि एक ऐसी भावनात्मक दुर्बलता है जो हमें लौकिक और पारमार्थिक दोनों क्षेत्रों में कमजोर बना देती है : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

अवधपुरी (विश्व परिवार)। अरुचि एक ऐसी भावनात्मक दुर्बलता है जो हमें लौकिक और पारमार्थिक दोनों क्षेत्रों में कमजोर बना देती है। उपरोक्त उदगार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने अवधपुरी में व्यक्त किये।

प्रवक्ता अविनाश जैन विद्यावाणी ने बताते हुये कहा कि मुनि श्री ने नकारात्मक शब्दों में से आज 'अरुचि' शब्द पर व्याख्यान देते हुये अरुचि के स्वरूप उसके कारण तथा परिणाम को समझते हुए उसके समाधान का रास्ता बाताते हुये कहा कि जहां मन है वहां काम नहीं जहां काम है वहां मन नहीं कोई काम है तो उसमें मन नहीं लग रहा है और जहां मन है वहां कोई काम ही नहीं है।

यह सभी अरुचि के लक्षण है हर व्यक्ति के जीवन में ऐसे कार्य होते हैं जो बड़े रुचि पूर्वक करते हैं,तथा कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो मन मार करके करते हैं। प्राय लोगों को लौकिक कार्यों में तो रुचि दिखती है,लेकिन धार्मिक कार्यों में उनको ठेल ठेल कर भेजना पड़ता है, मुनि श्री ने कहा किसी भी क्षेत्र में आपके अंदर उत्साह कायम रहना चाहिए, अंदर की रुचि जब जगती है तो कोई भी काम हमारे लिए सहज हो जाता है और रुचि नहीं है तो वही कार्य भार हो जाता है, हम लोग प्रवचन करते रुचि पूर्वक करते है, तो हमारे लिए सहज है और वही काम भार दिखने लगे तो समझ लेना अरुचि है। मुनि श्री ने कहा कि जो भी काम करो रुचि पूर्वक करोगे तो भार भी सहज हो जाएगा और अरुचि होगी तो सहज काम भी भार बन जाएगा अंदर से सहज स्वीकृति का भाव होना चाहिए। अरुचि में आनंद नहीं अरुचि जीवन को बोझिल बनाती है और रुचि जीवन को भार मुक्त करती है अरुचि का तीसरा कारण है मन का अन्य विषयों में उलझ जाना मुनि श्री ने कहा कि जो हमारा लक्ष्य है उससे हट के जिसको आप दूसरे शब्दों में कहते डिस्ट्रक्शन जिन विषयों में है वो कार्य के बीच में रुकावट बनेंगे आप बैठे हैं पढ़ने के लिए बाजू में मोबाइल है और थोड़ा सा उसको देख ले फिर आपका मन पढ़ाई में लगेगा क्या? देखतेदेखते एक रील के बाद दूसरे तीसरे और सब समय रील ही चला जाता है,और रियल हाथ से निकल जाता है, अरुचि केवल कार्यों के प्रति नहीं स्वयं के प्रति भी होती है, आत्मा की उपेक्षा से व्यक्ति अपनी तरफ नहीं देखता औरों की तरफ देखना शुरू कर देता है और उधर इधर उधर देखते देखते उसका चित्त सदैव उलझा रहता है मुनि श्री ने कहा कि इन कारणों से हम बचे तभी हम अरुचि के परिणामों से बच पाएंगे बिना रुचि के कार्य की गुणवत्ता नहीं हो सकती आधे अधूरे मन से चाहे तुम काम करो चाहे पढ़ाई करो चाहे धंधा करो चाहे साधना करो वह अच्छे नहीं होंगे एवरेज भले हो जाए ,संत कहते है जिस भाव से जो कार्य तुम कर रहे हो उसमें डूब करके करो लीन होकर काम करोगे तो उसका अंजाम भी वैसा ही होगा मन लगाकर पढ़ो मन लगाकर काम करो। मन लगाकर धंधा करो मन लगाकर ध्यान करो सब जगह मन लगाओ और मन कब लगेगा जिसमें आपको लाभ और आनंद की अनुभूति होगी मुनि श्री ने कहा कि कर्म को अपनी पूजा मानकर उसमें आनंद लीजिए आपकी रुचि हमेशा बनी रहेगी, अरुचि से कार्य करेंगे तो कार्य की।

गुणवत्ता अच्छी नहीं होगी रुचि नहीं रहेगी तो आपके सारे संबंध खत्म हो जाएंगे और संबंधों में कमी हो जाएगी और जीवन बोझिल बन जाता है संबंधों से अपने आप को काटो मत संबंधों से अपने आप को जोड़कर रखना, जिनकी अरुचि रहती है उनके मन में असंतोष होगा क्योंकि उनके अंदर शिकायतें बढ़ती है वह उत्साहीन हो जाता है,और उसका जीवन बोझिल बन जाता है वह ऊर्जा से शून्य हो जाता है इसलिए जो कार्य करना है रुचि पूर्वक करो संत कहते हैं अरुचि पूर्वक जीना यानी बिना प्राण के जीना मुनि श्री ने अरुचि को रुचि में परिवर्तित करते हुये कहा कि कोई भी काम करो तो उसे अपने हित से जोड़ो मेरा काम है मुझे ही करना है एक विद्यार्थी अध्ययन को अपना धर्म माने एक गृहणी घर के कार्य को अपना कर्तव्य माने, एक व्यापारी अपने व्यापार को अपना कर्तव्य माने, एक साधक अपनी साधना को अपना कर्तव्य माने, उसमें अपनी हित बुद्धि जगाकरके रखे तो स्वाभाविक तौर पर रुचि होगी पढ़ना पड़ रहा है? काम करना पड़ रहा है? धंधा करना पड़ रहा है? साधना करनी पड़ रही है? इसमें रुचि नहीं मजबूरी दिख रही है! मुनि श्री ने कहा कि जब अरुचि होने लगे घबराइए मत थोड़ा थोड़ा रोज रोज अभ्यास करें मुझे यह कार्य करना है ये कार्य करना है ये कार्य करना है यह भाव अंतर मन में जगजाएगा तो आपकी अरुचि रुचि में परिवर्तित हो सकती है जैसे एक बच्चे के मन में है एक विद्यार्थी के मन में पढ़ाई से रुचि कम हो रही तो उठे आंखें मूंदे भगवान को याद करें हे प्रभु मैं मुझे ऐसी दृष्टि दो कि मैं रुचि पूर्वक पढ़ सकूं मैं लगन से पढ़ सकूं मेरी पढ़ाई में रुचि जागृत हो सके यह प्रार्थना बार-बार दोहराओ आजकल होता उल्टा है अच्छे कार्यों में अरुचि और बुरे कार्यों में रुचि बस इसे ही पलटना है उन्होंने अपना उदाहरण दिया कि मेरी सिद्धांत ग्रंथों में बड़ी रुचि थी लेकिन साहित्य और व्याकरण में मेरी रुचि नहीं थी गुरुदेव ने मुझसे कई बार बोला कि तुम साहित्य पढ़ो मैंने कहा गुरुदेव मेरा मन सिद्धांत का है सिद्धांत में मेरी रुचि है साहित्य में बाद में देखूंगा गुरुदेव आप तो मुझे सिद्धांत का आशीर्वाद दो और मैंने षठखंडागम और कषाय पाहुण के पूरे भागों के अध्ययन का संकल्प लिया मेरी रुचि थी तो मैंने षठखंडागम और धवला की 16 पुस्तक महाधवला और जय धवला की 16 पुस्तक अच्छे से लगन पूर्वक पढ़ लिया और उस पर अधिकार भी प्राप्त कर लिया लेकिन साहित्य और व्याकरण के प्रति जो अरुचि थी मैंने उसमें अनुत्साह प्रकट किया। तो इसमें पिछड़ गया और कच्चा रह गया अगर गुरुदेव की बात मान ली होती तो सिद्धांत के साथ साहित्य और व्याकरण के क्षेत्र में भी मैं वैसा ही अधिकार प्राप्त कर लेता। -**अविनाश जैन**

अरुण साव नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों के साथ दो दिनों तक करेंगे मंथन

रायपुर। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव प्रदेशभर के नगरीय निकायों के नवनिर्वाचित जनप्रतिनिधियों के साथ दो दिनों तक मंथन करेंगे। वे इस दौरान प्रत्येक नगरीय निकाय की आगामी 5 वर्षों की कार्ययोजना पर संवाद करेंगे।

निर्वाचन आयोग जल्द लॉन्च करेगा एकल-बिंदु ऐप; मौजूदा 40 से अधिक आईटी ऐप्स होंगे सम्मिलित, बेहतर यूआई/यूएक्स के साथ

नया ECINET नागरिकों के लिए निर्वाचन सेवाओं को करेगा सुगम; निर्वाचन अधिकारियों के लिए डेटा प्रबंधन होगा सहज

रायपुर (विश्व परिवार)। एक प्रमुख पहल के रूप में, भारत निर्वाचन आयोग (ECI) एक नया उपयोगकर्ता-मित्र डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म विकसित कर रहा है, जो मतदाताओं सहित निर्वाचन से जुड़े सभी हितधारकों- जैसे कि निर्वाचन अधिकारी, राजनीतिक दल और नागरिक समाज-के लिए होगा। यह एकल प्लेटफ़ॉर्म, ECINET, आयोग के 40 से अधिक मौजूदा मोबाइल और वेब एप्लिकेशन को एकीकृत करेगा।

ECINET एक आकर्षक यूजर इंटरफेस (UI) और सरल यूजर एक्सपीरियंस (UX) प्रदान करेगा, जिससे सभी चुनावी गतिविधियाँ एक ही मंच से पूरी की जा सकेंगी। इससे उपयोगकर्ताओं को कई ऐप डाउनलोड करने और अलग-अलग लॉगिन याद रखने की आवश्यकता नहीं होगी।

इस मंच की कल्पना मुख्य निर्वाचन आयुक्त (CEC) श्री ज्ञानेश कुमार द्वारा मार्च 2025 में आयोजित मुख्य निर्वाचन अधिकारियों (CEOs) के सम्मेलन के दौरान की गई थी, जिसमें निर्वाचन आयुक्त डॉ. सुखबीर सिंह संधू और डॉ. विवेक जोशी भी उपस्थित थे।

ECINET उपयोगकर्ताओं को डेस्कटॉप या स्मार्टफोन के माध्यम से चुनावी डेटा तक पहुंच प्रदान करेगा। डेटा की शुद्धता सुनिश्चित करने के लिए केवल अधिकृत ECI अधिकारी ही डेटा प्रविष्ट करेंगे। किसी भी विवाद की स्थिति में, वैधानिक प्रपत्रों में दर्ज मूल डेटा को प्राथमिकता दी जाएगी।

ECINET में Voter Helpline App, Voter Turnout App, cVIGIL, Suvidha 2.0, ESMS, Saksham और KYC App जैसे ऐप सम्मिलित होंगे, जिन्हें मिलाकर अब तक 5.5 करोड़ से अधिक बार डाउनलोड किया जा चुका है। यह मंच लगभग 100 करोड़ मतदाताओं और 10.5 लाख बूथ स्तर अधिकारियों (BLOs), 15 लाख राजनीतिक दलों द्वारा नियुक्त बूथ स्तर एजेंटों (BLAs), 45 लाख मतदान अधिकारियों, 15,597 सहायक निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (AEROs), 4,123 निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण अधिकारियों (EROs) और 767 जिला निर्वाचन अधिकारियों (DEOs) को लाभान्वित करेगा।

ECINET का विकास उन्नत चरण में पहुँच चुका है और इसकी कार्यक्षमता, उपयोग में आसानी और साइबर सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए कठोर परीक्षण किए जा रहे हैं। इसे सभी 36 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के CEOs, 767 DEOs और 4,123 EROs से परामर्श के बाद और ECI द्वारा समय-समय पर जारी किए गए 9,000 पृष्ठों वाले 76 दस्तावेजों की समीक्षा के उपरांत तैयार किया जा रहा है।

ECINET द्वारा प्रदत्त डेटा पूरी तरह से 1950 और 1951 के जन प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1960 के निर्वाचक रजिस्ट्रीकरण नियम, 1961 के निर्वाचन संचालन नियम, और ECI के समय-समय पर जारी निर्देशों के अनुसार होगा।

सम्पूर्ण ज्ञान के प्रकाश में आतंकी हिंसा मुक्त हो समाज, सुख समृद्धि, भाईचारे हेतु विशेष आराधना

रायपुर (विश्व परिवार)। जैन संवेदना ट्रस्ट द्वारा महावीर स्वामी के कैवल्य कल्याण दिवस निमित्ते सवा लाख नवकार जाप का अनुष्ठान रखा गया है। जैन संवेदना ट्रस्ट के महेन्द्र कोचर व विजय चोपड़ा ने कहा कि हिंसा मुक्त हो समाज , भाईचारे व समृद्धि की कामना से जाप रखा गया है। परमात्मा से प्रार्थना करना है कि आर्तकियों को सद्बुद्धि दे कि हिंसा का रास्ता छोड़कर भगवान महावीर स्वामी के अहिंसा के मार्ग पर चलें और देश की मुख्यधारा में जुड़कर समाज व देश निर्माण में सहयोग करें। वैशाख सुदी 10 , बुधवार 7 मई को भगवान महावीर स्वामी का केवल ज्ञान प्राप्ति का दिन है। साढ़े बारह वर्ष की कठोर साधना के पश्चात गोदोहासन में काउसग्ग करते हुए महावीर स्वामी को शाल वृक्ष के नीचे ऋजुबालिका नदी के तट पर सम्पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति हुई थी। जैन संवेदना ट्रस्ट के महेन्द्र कोचर व विजय चोपड़ा ने बताया कि कैवल्य कल्याणक दिवस पर सम्पूर्ण ज्ञान के प्रकाश में सकल जैन समाज हिंसा मुक्त समाज , सुख समृद्धि व भाईचारे हेतु सवा लाख नवकार महामन्त्र की आराधना करेगा। महेन्द्र कोचर व विजय चोपड़ा ने आगे बताया कि ज्ञान के प्रकाश प्रतिरूप शुद्ध घी के दीपक या चिराग प्रज्वलित कर जैन भाई बहनें घर पर 12 नवकार का जाप कर आतंकी हिन्सा मुक्त समाज भाईचारे व समृद्धि हेतु प्रार्थना करेंगे। जाप प्रात: 7 से संध्या 6 बजे के मध्य किया जावेगा। चन्द्रेश शाह व महावीर कोचर ने कहा कि इस आयोजन की विशेषता है कि भगवान महावीर स्वामी को जिस गोदोहासन मुद्रा में केवल ज्ञान की प्राप्ति हुई थी सकल जैन समाज उसी गोदोहासन मुद्रा में घर घर 12 नवकार महामन्त्र का जाप करेंगे गोदोहासन में जाप की फ़ोटो , वीडियो महावीर कोचर 8889063888 मंजू कोठारी 94063 16281 , मंजू टाटिया 9827464648 , मयूरी गोलछा 8817810952 मोबाईल नम्बर पर व्हाट्सएप करें। महेन्द्र कोचर ने बताया कि इसका प्रचार छत्तीसगढ़ सहित पूरे भारत के जैन समाज में किया जावेगा। ताकि परमात्मा के सम्पूर्ण ज्ञान के प्रकाश में नवकार जाप से छत्तीसगढ़ व पूरे देश में अहिंसा परमो धर्म , सुख समृद्धि व भाईचारा बनाए रखने की शक्ति जनमानस को प्राप्त हो।

आतंकी हिंसा में शहीद हिंदुस्तानियों को श्रद्धांजलि गोदोहासन में सवा लाख नवकार जाप

पट्टाचार्य महोत्सव : अलौकिक, अविस्मरणीय, अद्वितीय और अनुपम

पट्टाचार्य महोत्सव हर्षोल्लास के मंगलमय वातावरण में सानन्द सम्पन्न हुआ

27 अप्रैल से 2 मई 2025 तक विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों के साथ हुआ आयोजन

इंदौर यह बात एक दम सार्वभौमिक सत्य है कि यदि किसी कार्य को पूर्ण श्रद्धा लगन मेहनत से किया जाए तो कार्य में सफलता अवश्य मिलती है वो कार्य सफलता के शिखर पर पहुंच ही जाता है। जी हां हम बात कर रहे है परम आदरणीय दानवीर धर्मनिष्ठ श्री मनीष गोधा श्रीमति सपना गोधा परिवार की। इन्होंने पट्टाचार्य महोत्सव को शिखर पर पहुंचा दिया। देवी अहिल्या की पावन धर्मप्राण नगरी में स्थित सुमति धाम जो अब तीर्थधाम बन गया में आयोजित पट्टाचार्य पदारोहण समारोह दिनांक 27 अप्रैल से 2 मई 2025 तक हर्षोल्लास के मंगलमय वातावरण में अत्यंत भव्यता एवं उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। यह महोत्सव यादगार ऐतिहासिक अविस्मरणीय यादें श्रद्धालुओ के मन मस्तिष्क पर अमित छाप छोड़कर चला गया। हर दृष्टि से अद्वितीय रहा-व्यवस्थाओं की शुचिता, आयोजन की गरिमा और जनमानस के उत्साह ने इसे सदैव के लिया यादगार अविस्मरणीय बना दिया।जिसने भी साक्षात यहां आकर एक साथ चार सो संतो के दर्शन किए उसने एक बात कहीं धरती पर समवशरण का दरबार लगाया है जीवन में ऐसा आनंद कभी नहीं आया है उसको शब्दों में व्यक्त नहीं किया जा सकता।महामहोत्सव की प्रमुख विशेषताएँ

इस आयोजन की सफलता का संपूर्ण श्रेय जाता है मुख्य आयोजक आदरणीय देव शास्त्र गुरू के परन भक्त व्यवहार कुशल दानवीर श्रीयुत मनीष गोधा एवं श्रीमती सपना गोधा परिवारजन इंदौर जिनकी सतत निष्ठा अनुशासन और समर्पण लगन मेहनत ने इस आयोजन को चार चांद लगा दिए। गुरुदेव चर्या शिरोमणि आचार्य विशुद्ध सागर जी महाराज ने कहा कि भव्य जीव मनीष गोधा श्रीमति सपना गोधा तुमने ऐसा कोन सा पुण्य किया है कि एक साथ चार सो संत आपके घर की पर आ रहे है। वास्तव में मुझ पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार कोटा के विचार से कई जन्मों का पुण्य उदय जब जीवन में आता है तब जाकर ऐसा भव्य आयोजन हो पाता है।उत्कृष्टता की ऊँचाइयों तक पहुँचाया जाता है।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था 30 अप्रैल को चर्या शिरोमणि श्री विशुद्ध सागर जी महाराज का पट्टाचार्य पद पर विधिवत् शुशोभित होना। पंडित प्रवर श्री धर्म चंद शास्त्री के द्वारा समस्त मांगलिक क्रियाएं करवाई गई। उसके बाद इस अवसर पर उपस्थित सभी आचार्य एवं मुनिराजों को संबोधन हेतु केवल पाँच मिनट का समय प्रदान किया गया। आश्चर्यजनक रूप से सभी ने इस अनुशासन का पालन करते हुए अपनी बातें संक्षेप में रखीं।

केवल एक विशेष मुनिराज को थोड़ा अधिक समय प्रदान किया गया क्योंकि उन्होंने अपने गुरु समाधिस्थ आचार्य श्री विराग सागर जी महाराज के अंतिम क्षणों का प्रत्यक्ष अनुभव साझा किया।जो श्रोताओं को अंतर्मन को गहराई तक छू गया।सुमति धाम की व्यवस्थाएँ लाजवाब अतुलनीय थीं। प्रात:सात बजे से नाश्ता, दोपहर दस बजे से सुस्वादिष्ट भोजन की व्यवस्था।

दो लाख से अधिक श्रद्धालुओं के लिए विशाल भोजनशाला, जहाँ बिना भीड़ और धक्का-मुक्की के सभी को भोजन मिला।जिसका लोगो ने भरपूर आनंद लिया।भोजन में हर आयु वर्ग के लिए विशेष ध्यान रखा गया बच्चों, युवाओं एवं वृद्धजनों के लिए अलग-अलग प्रकार के व्यंजन उपलब्ध थे।सबसे बड़ी बात ये थी कि वंहा दिनभर चाय, कॉफी आदि की सदैव सुविधा बनी रही।चार सो साधुओं के लिए चार सो पृथक चौंकों की व्यवस्था की गई जब एक साथ सभी संत आहार चर्या को उतरते थे तो वो दृश्य देख लोग भाव विभोर हो जाते। सैकड़ों लोगों ने इस अनुपम दृश्य को अपने मोबाइल में कैद किया।प्रबंध व्यवस्था की व्यवस्था तो देखते ही बनती थी

पैतालीस डिग्री तापमान होने के बावजूद भी विशाल पांडाल में एयर कंडीशनर की पर्याप्त व्यवस्था थी। सम्पूर्ण भूमि पर कालीन बिछाए गए जिससे श्रद्धालुओं के पाँव गर्मी से सुरक्षित रहें। साधुओं और आगंतुकों के लिए आवासीय व्यवस्था इतनी भव्य थी कि हर कोई प्रशंसा करता दिखा। सबसे बड़ा संदेश संपूर्ण भारत भर में ये गया कि

कार्यक्रम पूर्णत: निशुल्क था। न कहीं कोई चंदा, न रसीद, न दान पेटी-सच्चे अर्थों में सेवा और भक्ति का अनुपम उदाहरण पेश किया गया। सबसे बड़ी विशेष बात सभी साधुओं और चौका लगाने वालों को दूध,फल केसर सब्जी, अन्य आवश्यक सामग्री समय पर उपलब्ध कराई गई। हर चोके में इस लिस्ट लगा दी गई। जिसमे टेंट पानी लाइट एवम कोई भी समस्या ही उन मोबाइल नबर पर काल कर दीजिए।

भक्ति, विनम्रता और आत्मीयता का महान संगम द्रष्टिगत हुआ।

पूरे आयोजन में श्री मनीष गोधा एवं श्रीमती सपना गोधा की सादगी से उपस्थिति एक प्रेरणा बनी रही। वे मंच पर नृत्य करते हुए, आनंद से झूमते हुए देखे गए। उनका सम्पूर्ण परिवार-माता सहित-इस समारोह की शोभा बना रहा। इतनी विशाल व्यवस्था के बीच उन्होंने कभी भी घमंड नहीं दिखाया। हर किसी से आत्मीयता से मिलना, विनम्रता से बात करना-यह उनके स्वभाव की सरलता का परिचायक था।कुल मिलाकर ये कह सकते है कि पट्टाचार्य महोत्सव

एक अनुपम अद्वतीय आदर्श आयोजन हुआ। जो को पुण्य शाली श्रद्धालुगण यहां पधारे अपने को महान पुण्य शाली समझा।

कार्यक्रम में पूरी तरह से विघ्न संतोषी प्रवृत्तियों पर सतर्क निगरानी रखी गई, जिससे संपूर्ण आयोजन निर्विघ्न सम्पन्न हो सका।

श्रद्धालुओं ने आयोजन की भाव विभोर होते हुवे कहा कि-हमने जितना सोचा था, उससे कहीं अधिक पाया। सचमुच, ऐसा भव्य और अनुकरणीय कार्यक्रम वर्षों तक श्रद्धालुओ के मन मस्तिष्क पर चिर स्मरणीय रहेगा।

-पारस जैन पार्श्वमणि पत्रकार
कोटा (राजस्थान)

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर सोमवार 05 मई 2025

संक्षिप्त समाचार

नाबालिग से छेड़छाड़ करने वाला आरोपी गरियाबंद पुलिस के हत्थे चढ़ा

गरियाबंद (विश्व परिवार)। गरियाबंद जिले के थाना राजिम क्षेत्र में एक नाबालिग बालिका से छेड़छाड़ के मामले में पुलिस ने त्वरित कार्रवाई करते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। मिली जानकारी के अनुसार, नाबालिग पीड़िता के परिजनों ने 4 मई को थाना राजिम में रिपोर्ट दर्ज कराई थी कि राजिम के एक किराए के मकान में रहने वाला नजमुदीन उर्फसुर्या, जो मूलत: उत्तर प्रदेश के मेरठ का निवासी है, उनके टिफ्नि सेंटर से भोजन मंगवाता था। कभी-कभी पीड़िता स्वयं आरोपी को टिफ्नि पहुंचाने जाती थी। इसी दौरान आरोपी द्वारा पीड़िता के साथ अश्लील हरकतें की जाती थीं। परिजनों की शिकायत पर थाना राजिम में आरोपी नजमुदीन उर्फ सुर्या के खिलाफ छेड़छाड़ की धाराओं में मामला पंजीबद्ध किया गया। विवेचना के दौरान पुलिस ने साक्ष्यों और गवाहों के आधार पर आरोपी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया, जहाँ से उसे न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।
आरोपी का विवरण: नाम: नजमुदीन उर्फसुर्या. पिता का नाम: सलाउदीन, उम्र: 32 वर्ष, निवासी: तिहाई मोहल्ला, 508 मावना, मेरठ, उत्तर प्रदेश।

स्वामी आत्मानंद स्कूल में पहली कक्षा के लिए 6 मई को होगी लॉटरी, 120 आवेदकों में से 50 बच्चों का होगा चयन

गरियाबंद (विश्व परिवार)। जिले के स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट अंग्रेजी माध्यम विद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2025-26 के लिए कक्षा पहली में प्रवेश हेतु लॉटरी प्रक्रिया आगामी 6 मई 2025, मंगलवार को आयोजित की जाएगी। यह लॉटरी प्रक्रिया प्रात: 10 बजे विद्यालय परिसर में की जाएगी, जिसमें पालकों के साथ-साथ शाला प्रबंधन समिति, गणमान्य नागरिक तथा संबंधित अधिकारीगण उपस्थित रहेंगे। विद्यालय प्रशासन ने यह जानकारी देते हुए बताया कि यह प्रक्रिया पूरी तरह पारदर्शी और निष्पक्ष होगी। विद्यालय प्रबंधन के अनुसार, कक्षा पहली में कुल 50 सीटों के लिए अब तक 120 आवेदन प्राप्त हो चुके हैं। चूंकि सीटें सीमित हैं, इसलिए सभी पात्र आवेदकों में से लॉटरी के माध्यम से चयन किया जाएगा। संभावना जताई गई है कि 5 मई तक आवेदन संख्या में और वृद्धि हो सकती है। अन्य कक्षाओं की बात करें तो सभी कक्षाएं पहले से ही पूर्ण हैं, केवल कक्षा 11वीं में ही पर्याप्त सीटें उपलब्ध हैं। वहां अब तक केवल 6 आवेदन आए हैं, अत: उस कक्षा के लिए लॉटरी की आवश्यकता नहीं पड़ी है। विद्यालय प्रशासन ने उन सभी पालकों से अपील की है जिन्होंने अपने बच्चों के लिए ऑनलाइन आवेदन किया है कि वे लॉटरी प्रक्रिया के दौरान अनिवार्य रूप से उपस्थित रहें।

युक्तियुक्तकरण प्रक्रिया को पूरी पारदर्शिता एवं समय सीमा में करें पूर्ण : कलेक्टर उइके

शासन के निर्देशानुसार पूरी करें प्रक्रिया

शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक में दिए निर्देश

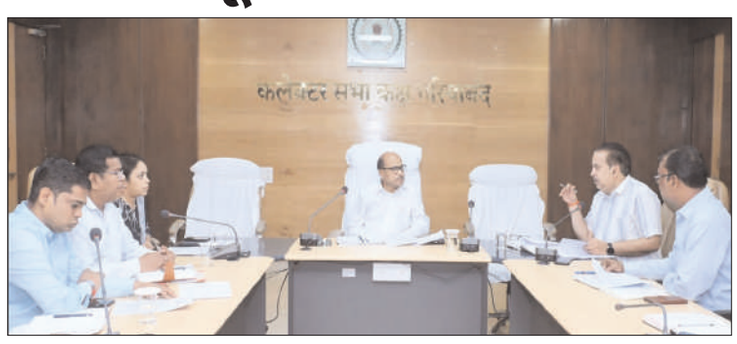

गरियाबंद (विश्व परिवार)। राज्य शासन द्वारा जिले के स्कूलों में आवश्यकतानुसार शिक्षकों एवं शालाओं के युक्तियुक्तकरण के संबंध में निर्देश जारी किए गए हैं। इसी क्रम में कलेक्टर बीएस उइके ने जिले में संचालित शालाओं एवं अतिशेष शिक्षकों के युक्तियुक्तकरण के संबंध में अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिए।

कलेक्टर ने कलेक्टर सभाकक्ष में शिक्षा विभाग की समीक्षा बैठक लेते हुए कहा कि राज्य शासन के निर्देशानुसार जिले में युक्तियुक्तकरण प्रक्रिया को पूरी पारदर्शिता एवं निर्धारित समय सीमा में पूर्ण किया जाए। उन्होंने कहा कि राज्य शासन से प्राप्त निर्देशों का पूर्णत: पालन किया जाना चाहिए।

जिले में युक्तियुक्तकरण प्रक्रिया को निष्पक्ष रूप से सुनिश्चित करने के लिए जिला स्तरीय एवं खंड स्तरीय समिति का गठन किया गया है। समिति में शामिल सभी अधिकारी इस प्रक्रिया को सावधानीपूर्वक पूर्ण करने में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करें।

कलेक्टर ने कहा कि प्रक्रिया पूर्ण होने से शिक्षा विभाग में शिक्षकों की कमी की समस्या काफी हद तक समाप्त हो जाएगी। इससे सभी विद्यालयों में बच्चों के अध्यापन हेतु पर्याप्त शिक्षक उपलब्ध होंगे और पढ़ाई के स्तर में सुधार आएगा।

उन्होंने यह भी निर्देश दिया कि शासन के निर्देशानुसार शालाओं में दर्ज बच्चों की संख्या के आधार पर विद्यालयों की सूची तैयार की जाए। साथ ही, जिले में अतिशेष शिक्षकों की संख्या, शिक्षक विहीन शालाएं एवं एकल शिक्षक वाले विद्यालयों की सूची भी निर्धारित समय सीमा में समिति को प्रस्तुत की जाए।

बैठक में अपर कलेक्टर नवीन भगत, जिला शिक्षा अधिकारी एके सारस्वत, डीएमसी केएस नायक सहित सभी एसडीएम एवं विकासखंड शिक्षा अधिकारी उपस्थित थे।

राज्यपाल रमेन डेका ने सरगोड़ ग्राम में एसएस फॉर्म का किया औचक निरीक्षण

उन्नत तकनीक से हो रहे मछली एवं मुर्गी पालन की सराहना, किसानों को प्रेरणा लेने का दिया संदेश

गरियाबंद (विश्व परिवार)। राज्यपाल रमेन डेका ने आज अपने एक दिवसीय गरियाबंद प्रवास के दौरान विकासखंड फिंगेश्वर के ग्राम सरगोड़ स्थित एसएस फॉर्म का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने फॉर्म में अपनाई जा रही उन्नत तकनीकों से किये जा रहे मछली पालन, मुर्गी पालन और हैचरी व्यवस्था का गहन अवलोकन किया।

निरीक्षण के दौरान राज्यपाल ने फॉर्म में निर्मित बड़े तालाबों और तीन टन क्षमता वाली आठ टंकियों में हो रहे मछली उत्पादन की सराहना की। संचालक ने उन्हें बताया कि इन टंकियों में मछलियों को शुद्ध फिल्टर युक्त पानी एवं पौष्टिक चारा दिया जाता है, जिससे मछलियों का तेजी से और स्वस्थ विकास संभव हो रहा है। ऑक्सीजन सप्लाई और वॉटर सर्कुलेशन के लिए अत्याधुनिक मशीनों का भी प्रयोग किया जा रहा है। राज्यपाल डेका ने किसानों को ऐसी नई तकनीकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा कि इससे ना केवल उत्पादन बढ़ता है, बल्कि आमदनी भी बढ़ती है। उन्होंने मौके पर मौजूद मत्स्य विभाग के सहायक संचालक को निर्देश दिया कि वे इन तकनीकों की जानकारी अधिक से अधिक किसानों तक पहुँचाएँ और उन्हें उन्नत मछली पालन के लिए प्रेरित करें। एसएस फॉर्म में हो रहे मुर्गी पालन और हैचरी उत्पादन की भी राज्यपाल ने सराहना की और कहा कि यह तकनीक अन्य किसानों के लिए प्रेरणास्त्रोत बन सकती है। इस अवसर पर गरियाबंद विधायक रोहित साहू, कलेक्टर बीएस उइके, जिला पंचायत सीईओ जीआर मरकाम सहित अन्य विभागीय अधिकारी और स्थानीय जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

पानी सप्लाई केंद्र में पानी की कालाबाजारी पर लगेगी रोक- संजय पाण्डे

निर्धन कन्या विवाह , धार्मिक कार्य और शोक कार्यक्रम के लिए पानी मिलेगा नि:शुल्क- महापौर

जगदलपुर: (विश्व परिवार)। महापौर संजय पाण्डे, महापौर परिषद के सदस्य व नगर निगम आयुक्त प्रवीण कुमार वर्मा ने शनिवार को पानी सप्लाई केंद्र का जायजा लिया। जहां वर्तमान व्यवस्था देख महापौर ने नाराजगी जाहिर की। फिजूल बहते पानी को देखकर उन्होंने कहा की पानी टैंकर भरे जाने के बाद पानी व्यर्थ नहीं बहना चाहिए। वहीं दिन भर में जितने भी पानी टैंकर भरे जाते हैं उनका हिसाब किताब पूरे पारदर्शिता के साथ किया जाना चाहिए। आम लोगों हेतु पानी सप्लाई में सम्मानित पार्षद व अन्य जनप्रतिनिधियों के द्वारा जो भी पानी टैंकर सप्लाई की जाती है उसमें किसी तरह की कोताही नहीं होनी चाहिए। दरअसल लंबे समय से पानी सप्लाई केन्द्रो में कुछ अवस्थाएं थी जिसकी जानकारी महापौर सहित पार्षदों को मिली थी। अवकाश का दिन होने के बावजूद भी संजय पाण्डे निगमके महापौर परिषद के सदस्यों के साथ पानी सप्लाई सेंटर में आयुक्त के साथ निरीक्षण करने पहुंचे।महापौर पाण्डे ने कहा की सामान्य सभा में टैंकरों के दर तय किए गए हैं जोकि सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित किया गया है । निर्माण कार्य हेतु उपयोग में लाए जाने वाले टैंकरों से प्रति टैंकर एक हज़ार रुपया की राशि काटी जानी है । निर्धन कन्या के विवाह व शोक कार्यक्रम के लिए पानी टैंकर नि:शुल्क दिया जाएगा साथ ही धार्मिक कार्यक्रम के लिए आयोजकों द्वारा पानी स्टोरेज की व्यवस्था किए जाने पर वहां पर भी पानी टैंकर नि:शुल्क दी जाएगी। अनियमितता से बचने राशि जमा कर रशीद प्राप्त करने के बाद ही पानी टैंकर भेजा जाएगा।

जल कार्य विभाग के सभापति सुरेश गुप्ता ने कहा कि पानी का सदुपयोग हो और टैंकर का कहीं भी गलत उपयोग न हो पाए इसके लिए व्यवस्था दुरुस्त किया जाएगा। वहीं जिसकी ड्यूटी पानी सप्लाई केंद्र में रहेगी उसकी जिम्मेदारी होगी कि वह पानी की बर्बादी नहीं होने देगा। नियम का पालन नहीं करने वालों पर कड़ी कार्यवाही की जाएगी।

महापौर के साथ नगर निगम सभापति खेमसिंह देवांगन, जल कार्य विभाग के सभापति सुरेश गुप्ता, एमआईसी सदस्य निर्मल पाणिग्रही, लक्ष्मण झा, रितेश सिन्हा सहित नगर निगम के कर्मचारी उपस्थित रहे।

पुलिस अधीक्षक ने थाना दुगली का किया आकस्मिक निरीक्षण

धमतरी(विश्व परिवार)। कर्मचारी गिरफ्तारी वारंट अदम तामिल को तस्दीक ना करने से थाना प्रभारी को जारी किया गया,कारण बताओ नोटिस। थाना भवन,थाना परिसर,मालखाना, बंदीगृह,कंप्यूटर कक्ष, रोजनामचा, सहित रजिस्टर का निरीक्षण कर, साफसफाई के दिये निर्देश। थाना आने वाले फरियादी या शिकायत कर्ता से शिष्ट व्यवहार रखने के भी दिये निर्देश। थाने के लंबित अपराधों, शिकायत,मर्ग एवं लंबित मामले,लंबित पत्रों का शीघ्र निराकरण करने के दिये निर्देश। पुलिस अधीक्षक महोदय श्री सूरज सिंह परिहार द्वारा थाना में आकस्मिक निरीक्षण कर आवश्यक दिशा निर्देश दिये। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक महोदय ने थाने में दर्ज विभिन्न गंभीर अपराधों की जानकारी थाना प्रभारी एवं विवेचकों से पेंडिंग अपराधों,शिकायत,मर्ग एवं लंबित अपराधों की पेंडिंग सूची का अवलोकन किया गया एवं सुशासन त्यौहार में प्राप्त शिकायत पत्रों का शीघ्र निराकरण करने के निर्देश दिये। थाने में सभी विवेचकों से लंबित किसके-किसके पास कितना लंबित है जानकारी ली गई एवं लंबित शिकायत,लंबित अपराध, लंबित मर्ग,लंबित प्रकरणों के त्वरित निराकरण करने के सख्त निर्देश दिये गए। साथ ही केस डायरी को प्रत्येक विवेचकों को अध्यन करने तथा अपराध नियंत्रण के लिए पुलिस टीम को सतर्क रहकर मुस्तैदी से कार्य करने के भी निर्देश दिये। कर्मचारी गिरफ्तारी वारंट अदम तामिल को तस्दीक ना करने से थाना प्रभारी सउनि.प्रकाश नाग को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया।

कांग्रेस पार्षद लोकेश चौधरी के सुझाव पर हुआ निर्णय, नगर निगम ने सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं को बैनर शुल्क में दी 50 प्रतिशत की छूट

जगदलपुर (विश्व परिवार)। नगर निगम की सामान्य सभा शुक्रवार को सम्पन्न हुई इसमे शहर में लगने वाले ग्राउंड होर्डिंग्स और बैनरों को लेकर एक नई शुल्क नीति को मंजूरी दी गई है। इस नीति के तहत, प्रिंटिंग प्रेस संचालकों को प्रत्येक बैनर के पीछे ?1000 की राशि नगर निगम को अदा करनी होगी। यह नियम तीन अलग-अलग ज़ोन में लागू होगा, जहां टेंडर प्रणाली के माध्यम से प्रिंटिंग प्रेस का चयन किया जाएगा।

बैठक के दौरान कांग्रेस पार्षद श्री लोकेश चौधरी ने इस नीति पर सवाल उठाया और मांग की कि सामाजिक और धार्मिक आयोजनों पर यह शुल्क नहीं लगाया जाना चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि जब प्रिंटिंग प्रेस निगम को अतिरिक्त शुल्क देगा, तो उसकी भरपाई वह आम नागरिकों से करेगा, जिससे समाजसेवी और धार्मिक आयोजनों को आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा।

पार्षद चौधरी ने कहा, राजनीतिक बैनरों पर शुल्क लिया जाए, लेकिन समाज और धर्म से जुड़े आयोजनों को इससे मुक्त रखा जाए। यह बैनर बड़े पैमाने पर लगते हैं और आम नागरिकों की भागीदारी इन आयोजनों में अधिक होती है।

निगम प्रशासन ने पार्षद की आपत्ति को गंभीरता से लेते हुए लंबी चर्चा के बाद निर्णय लिया कि सामाजिक और धार्मिक बैनरों को 50ब शुल्क में छूट दी जाएगी। इस निर्णय का उद्देश्य आम नागरिकों पर पड़ने वाले आर्थिक भार को कम करना है। निर्णय के पश्चात पार्षद लोकेश चौधरी ने नगर निगम का धन्यवाद ज्ञापित किया

चितापुर में स्टाफडेम के निर्माण हेतु भूमि पूजन: गोयल

जगदलपुर (विश्व परिवार)। ग्राम पंचायत चितापुर में आज सोनादेई माता मंदिर में पूजा-अर्चना कर क्षेत्र की सुख-समृद्धि और जनकल्याण की कामना की गई। इसी अवसर पर जल संसाधन विभाग द्वारा स्वीकृत ?297.18 लाख की लागत से बनने वाले स्टाफ डेम का भूमि पूजन सम्पन्न हुआ।

भूमि पूजन चित्रकोट विधायक श्री विनायक गोयल जी के कर-कमलों से किया गया।

यह डेम क्षेत्र में जल संरक्षण, सिंचाई सुविधा और कृषि विकास के लिए एक महत्वपूर्ण परियोजना है, जिससे ग्रामीणों को दीर्घकालिक लाभ मिलेगा।

इस अवसर पर चित्रकोट विधायक विनायक गोयल जी, जनपद अध्यक्ष श्रीमती मानकदेई कश्यप जी, जनपद उपाध्यक्ष हरिप्रसाद कश्यप जी, रीतेश दास जोशी जी, पूर्व जिला पंचायत सदस्य रैतुराम बघेल जी, पूर्व जनपद अध्यक्ष अन्तराम कश्यप जी, पूर्व मण्डल अध्यक्ष फुलसिह सेठिया जी, महादेव नाग, श्रीमती दयमती नाग, समदू कश्यप, श्रीमती दुर्गावती नाग, महादेव कवासी, मेघनाथ कश्यप, दुर्जन सिंह कश्यप, बलीराम मांझी, विघनेसश्वर बाकड़े, नारायण कुरानी, श्रीमती गीता बघेल, नकुल ठाकुर, पीलुराम, सुखरू, जी ग्राम पंचायत के पंचगण, जल संसाधन विभाग के अधिकारी एवं कर्मचारी सहित बड़ी संख्या में ग्रामीणजन उपस्थित रहे।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता, लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड, दन्तेवाड़ा
(फोन/ फैक्स नं.- 07856-252362, ई-मेल- eedan-phe-cg@nic.in)

निविदा सू.क्र./03/ले.शा./का.अ./लो.स्वा.यां./2025 — दन्तेवाड़ा, दिनांक : 29.04.2025

निविदा आमंत्रण सूचना

एकीकृत पंजीयन व्यवस्था प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से प्रपत्र आईटम दर पर निम्नलिखित कार्य हेतु (Online) निविदा आमंत्रित की गयी है.

कार्य का नाम :- Empanelment of the Third Party Inspection Agencies (TPIs) under Jal Jeevan Mission work

क्र.	सिस्टम टेण्डर क्रमांक	कार्य का विवरण/ग्राम/ विकासखण्ड	निविदा आमंत्रण	अनुमानित लागत (करोड़ में)
1	167064	The submission of proposal by a consultant / organization / agency as Third Party Inspection Agencies (TPIs) for inspection of different works under rural water supply which includes in- village infrastructure works in:- (1) Retrofitting of 53 Villages, (2) New single village schemes in 172 Villages (3) Solar based schemes as a part of SVS or Retrofitting schemes. It implies that consultant / organization / agency has read the detailed EoI	चतुर्थ काल	113.33
		कुल योग		113.33

निविदा की सामान्य शर्तें एवं अन्य जानकारी वेबसाईट पोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in पर दर्शित है.
टीप :- निविदा डाउनलोड करने की अंतिम तिथि दिनांक 13.05.2025 है.

G-252600582/2

कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खंड, दंतेवाड़ा

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर सोमवार 05 मई 2025

व्यापार समाचार

डॉलर के मुकाबले रुपए में तेजी, सात महीनों के उच्चतम स्तर पर पहुंचा

नई दिल्ली(एजेंसी)। डॉलर के मुकाबले रुपए में तेजी का दौर जारी है और शुक्रवार को यह 40 पैसे की तेजी के साथ 84 के स्तर के नीचे पहुंच गया। यह सात महीनों में पहला मौका है जब डॉलर की तुलना में रुपया इस स्तर पर कारोबार कर रहा है। अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले स्थानीय मुद्रा की शुरुआत 84.09 के स्तर पर हुई और शुरुआती कारोबार में ही यह 83.90 के स्तर पर पहुंच गया। इससे पहले के सत्र में डॉलर के मुकाबले रुपया 84.49 पर बंद हुआ था। बाजार के जानकारों के मुताबिक, भारतीय शेयर बाजार में डेट और इक्विटी में विदेशी निवेश बढ़ने और अमेरिका एवं भारत के बीच व्यापार वार्ता को लेकर सकारात्मक अपडेट के कारण डॉलर के मुकाबले रुपए को सहारा मिल रहा है। आखिरी बार अमेरिकी मुद्रा की तुलना में भारतीय करेंसी में 84 का स्तर 1 अक्टूबर, 2024 को देखा गया था। इस दौरान यह 83.82 पर था। वैश्विक स्तर पर अस्थिरता के चलते आई गिरावट के बाद भारतीय शेयर बाजार में विदेशी निवेशकों ने फिर से बड़ी मात्रा में निवेश करना शुरू कर दिया है। बीते 11 कारोबारी सत्रों में विदेशी संस्थागत निवेशक (एफआईआई) 37,375 करोड़ रुपए का निवेश कर चुके हैं। हाल ही में अमेरिकी मीडिया को दिए इंटरव्यू में अमेरिकी ट्रेड वार्ताकार जेमिसन ग्रीर ने कहा था कि भारत और अमेरिका व्यापार समझौते के करीब हैं, लेकिन यह अभी तक पूरा नहीं हुआ है। उन्होंने आगे कहा, भारत के ट्रेड मंत्री के साथ मेरी बातचीत चल रही है। मैंने अपनी टीम एक सप्ताह के लिए भारत भेजी थी। वे पिछले सप्ताह यहां आए थे और मैंने उनके मुख्य वार्ताकार से मुलाकात की भी थी। रुपए में तेजी की एक वजह डॉलर इंडेक्स में कमजोरी आना है। दुनिया की छह बड़ी मुद्राओं की तुलना में अमेरिकी मुद्रा की स्थिति दर्शाने वाला डॉलर इंडेक्स 100 के नीचे फिसलकर 99 के आसपास बना हुआ है।

एप्पल ने भारत में मार्च तिमाही में किया रिकॉर्ड प्रदर्शन, जल्द खुलेगा नया रिटेल स्टोर : टिम कुक

नई दिल्ली(एजेंसी)। एप्पल ने जनवरी-मार्च तिमाही में भारत सहित दुनिया के कई देशों में रिकॉर्ड ग्रोथ दर्ज की है। इसके साथ ही कंपनी दुनियाभर में नए रिटेल स्टोर खोलने की योजना बना रही है। एप्पल के सीईओ टिम कुक ने कहा, तिमाही के दौरान एप्पल ने दो नए रिटेल स्टोर खोले हैं। हम यूएई में एक नया रिटेल स्टोर, सउदी अरब में ऑनलाइन स्टोर और इस वर्ष के अंत में भारत में नए रिटेल स्टोर शुरू करेंगे। सॉफ्टवेयर में कंपनी ने अभी आईओएस 18.4 जारी किया है, जिसने एप्पल इंटेलिजेंस को फ्रेंच, जर्मन, इतालवी, पुर्तगाली, स्पेनिश, जापानी, कोरियाई और चीनी सहित अधिक भाषाओं में पेश किया है। मार्च तिमाही में एप्पल की आय 95.4 अरब डॉलर रही है। इसमें सालाना आधार पर 5 प्रतिशत से अधिक का उछाल देखा गया है। प्रति शेयर आय 1.65 डॉलर रही है। इसमें सालाना आधार पर 8 प्रतिशत का उछाल देखा गया है। कुक ने एक बयान में कहा, एप्पल ने मजबूत तिमाही नतीजे जारी किए हैं, जिसमें सर्विसेज में दोहरे अंकों की वृद्धि हुई है। उन्होंने कहा, हमें अपने प्रोडक्ट लाइनअप में आईफोन 16ई को जोड़ा है और एप्पल सिलिकॉन की असाधारण क्षमताओं का लाभ उठाने वाले शक्तिशाली नए मैक और आईपैड पेश किए हैं और हमें यह घोषणा करते हुए गर्व हो रहा है कि हमने पिछले एक दशक में अपने कार्बन उत्सर्जन में 60 प्रतिशत की कटौती की है। एप्पल के मुख्य वित्तीय अधिकारी केवन पारेख ने कहा कि मार्च तिमाही में ईपीएस में 8 प्रतिशत की वृद्धि हुई और ऑपरेशनल कैश फ्लो 24 अरब डॉलर रहा, जिससे कंपनी शेयरधारकों को 29 अरब डॉलर लौटा सकी है। एप्पल के निदेशक मंडल की ओर से कंपनी के सामान्य शेयर के लिए 0.26 डॉलर प्रति शेयर का कैश डिविडेंड घोषित किया गया है। इसमें सालाना आधार पर 4 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई है। डिविडेंड का भुगतान 15 मई, 2025 को शेयरधारकों को किया जाएगा और इसकी रिकॉर्ड डेट 12 मई, 2025 है।

पूनम गुप्ता ने आरबीआई के डिप्टी गवर्नर का पदभार संभाला

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की नई डिप्टी गवर्नर डॉ. पूनम गुप्ता ने शुक्रवार को पदभार संभाला और अब वे केंद्रीय बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) का हिस्सा होंगी। केंद्र सरकार ने उन्हें 2 अप्रैल को डिप्टी गवर्नर के पद पर नियुक्त किया था। पदभार ग्रहण करने के दिन से उनका कार्यकाल तीन वर्ष या अगले आदेश तक रहेगा। वैश्विक आर्थिक चुनौतियों और उतार-चढ़ाव वाली मुद्रास्फीति दरों के बीच डॉ. गुप्ता की विशेषज्ञता महत्वपूर्ण होगी। आरबीआई के एक बयान के अनुसार, डिप्टी गवर्नर के रूप में डॉ. गुप्ता मौद्रिक नीति विभाग, वित्तीय बाजार परिचालन विभाग, आर्थिक और नीति अनुसंधान विभाग, वित्तीय स्थिरता विभाग, अंतरराष्ट्रीय विभाग, सांख्यिकी और सूचना प्रबंधन विभाग, कॉर्पोरेट रणनीति और बजट विभाग और संचार विभाग का कार्यभार संभालेंगी। इससे पहले, डॉ. गुप्ता नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च (एनसीएईआर) की महानिदेशक थीं, जो आर्थिक विकास, इंटरनेशनल फाइनेंशियल आर्किटेक्चर, केंद्रीय बैंकिंग, मैक्रो आर्थिक स्थिरता, सार्वजनिक ऋण और राज्य वित्त से संबंधित मुद्दों पर काम करती थीं। उन्होंने प्रधानमंत्री की आर्थिक सलाहकार परिषद के सदस्य और 16वें वित्त आयोग की सलाहकार परिषद के संयोजक के रूप में भी कार्य किया। एनसीएईआर में शामिल होने से पहले, डॉ. गुप्ता ने अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) और विश्व बैंक में लगभग दो दशकों तक वरिष्ठ पदों पर काम किया था। उन्होंने दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड (यूएसए) में भी पढ़ाया और भारतीय सांख्यिकी संस्थान (आईएसआई), दिल्ली में विजिटिंग फैकल्टी के रूप में भी काम किया। वे नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ पब्लिक फाइनेंस एंड पॉलिसी (एनआईपीएफपी) में आरबीआई चेयर प्रोफेसर और इंडियन काउंसिल फॉर रिसर्च ऑन इंटरनेशनल इकोनॉमिक रिलेशंस (आईसीआरआईईआर) में प्रोफेसर रही हैं। डॉ. गुप्ता ने कई शोध पत्र प्रकाशित किए हैं और एक संपादित पुस्तक इमर्जिंग जायंट्स- चाइना एंड इंडिया इन द वर्ल्ड इकोनॉमी भी लिखी है। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ मैरीलैंड, यूएस से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री और पीएचडी की है और दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स, दिल्ली विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री की है।

जोस बटलर ने आईपीएल में रचा इतिहास धोनी और वॉर्नर को छोड़ा पिछे

अहमदाबाद(एजेंसी)। इंग्लैंड के पूर्व कप्तान जोस बटलर ने अपने शानदार आईपीएल करियर में एक और बड़ी उपलब्धि हासिल की है. वो अब टूर्नामेंट के इतिहास में 4000 रन तक पहुंचने वाले दूसरे सबसे तेज बल्लेबाज बन गए हैं. उन्होंने ये उपलब्धि 2 मई को नरेंद्र मोदी स्टेडियम में गुजरात टाइटन्स की ओर से खेलते हुए सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ मैच में हासिल की. बटलर ने मैच में 37 गेंदों में शानदार 67 रनों की पारी खेली, जिसमें 3 चौके और 4 छक्के शामिल थे. मैच से पहले बटलर को यह उपलब्धि हासिल करने के लिए सिर्फ 12 रनों की जरूरत थी, और जैसे ही उन्होंने 12 रन पुरे किए वैसे ही वो गेंदों का सामना करने के मामले में 4000 आईपीएल रन तक पहुंचने वाले दूसरे सबसे तेज बल्लेबाज बन गए. उनसे ऊपर केवल दो दिग्गज - क्रिस गेल और एबी डिविलियर्स से हैं. इन दोनों ने 2658 गेंदों में ये उपलब्धि हासिल की जबकि बटलर ने 2677 गेंदों में ये कारनामा अंजाम दिया. इस कारनामे के साथ ही बटलर ने सूर्यकुमार यादव, डेविड वॉर्नर, सुरेश रैना और एमएस धोना को पीछे छोड़ दिया है. इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए सूर्य ने (2,714), वॉर्नर (2,809), रैना (2,881) और धोनी ने (2,887) गेंदें खेलनी पड़ी. जोस बटलर ने अब तक आईपीएल में 117 मैचों में 40.52 की औसत और 149.74 की स्ट्राइक रेट से कुल 4052 रन बनाए है. जिसमें सात शतक और 23 अर्धशतक शामिल हैं. इस सीजन में भी बटलर शानदार खेल का प्रदर्शन कर रहे हैं. उन्होंने अब तक 10 मैचों में 470 रन बना दिए हैं, जिसमें 5 अर्धशतक शामिल है. जोस बटलर का आईपीएल सफर मुंबई इंडियंस के साथ शुरू हुआ, जिसके लिए उन्होंने 24 मैच खेले, जिसमें उन्होंने 25.09 की औसत और 145 से ज्यादा की स्ट्राइक रेट से 527 रन बनाए. इसके बाद वो 2018 में राजस्थान रॉयल्स में चले गए जहां उन्होंने 41.84 की औसत और 147.79 की स्ट्राइक रेट से 3,055 रन बनाए. लेकिन पिछले साल राजस्थान ने उन्हें रिलीज कर दिया, और फिर गुजरात ने उन्हें आईपीएल 2025 की मेगा नीलामी में 15.75 करोड़ में खरीद लिया.

वित्त वर्ष 25 की चौथी तिमाही में इंडियन ऑयल का मुनाफा 50 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली(एजेंसी)। इंडियन ऑयल कॉरपोरेशन ने बुधवार को वित्त वर्ष 25 की चौथी तिमाही के नतीजों का ऐलान किया। जनवरी-मार्च अवधि में सरकारी ऑयल मार्केटिंग कंपनी को 7,264.85 करोड़ रुपए का मुनाफा हुआ है, जो कि सालाना आधार पर 50 प्रतिशत अधिक है। इससे पहले वित्त वर्ष 24 की मार्च तिमाही में कंपनी को 4,837.69 करोड़ रुपए का मुनाफा हुआ था। वित्त वर्ष 25 की तीसरी तिमाही में कंपनी ने 2,874 करोड़ रुपए का मुनाफा कमाया था। कंपनी के मुनाफे में बढ़ोतरी की वजह रिफाइनिंग मार्जिन में सुधार, इन्वेंट्री गेन और बेहतर परिचालन दक्षता है। इंडियन ऑयल के बोर्ड ने वित्त वर्ष 2024-25 के लिए 10 रुपए की फेस वैल्यू वाले प्रत्येक शेयर पर 3 रुपए का डिविडेंड घोषित किया है। इंडियन ऑयल का ग्रॉस रिफाइनिंग मार्जिन (जीआरएम) 8 डॉलर प्रति बैरल रहा है। इससे पहले की तिमाही में कंपनी का जीआरएम 2.9 डॉलर प्रति बैरल था। वित्त वर्ष 25 की चौथी तिमाही में कंपनी का ईबीआईटीडीए मार्जिन 7 प्रतिशत रहा है, जो कि तीसरी तिमाही में 3.7 प्रतिशत था। तिमाही आधार पर कंपनी का ईबीआईटीडीए 90 प्रतिशत बढ़कर 13,572 करोड़ रुपए हो गया है, जो कि पिछली तिमाही में 7,117 करोड़ रुपए था। वित्त वर्ष 25 की चौथी तिमाही में कंपनी की ऑपरेशंस से आय बढ़कर 1.95 लाख करोड़ रुपए हो गई है, तीसरी तिमाही में यह आंकड़ा 1.94 लाख करोड़ रुपए था।

भारत का विदेशी मुद्रा भंडार 688 बिलियन डॉलर के पार पहुंचा

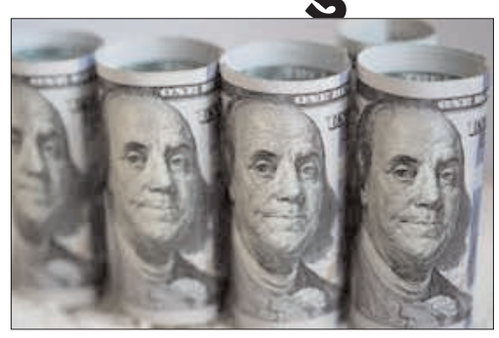

मुंबई(एजेंसी)। आरबीआई के शुक्रवार को जारी नवीनतम आंकड़ों के अनुसार, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार लगातार आठवें सप्ताह बढ़कर 25 अप्रैल तक 688.13 बिलियन डॉलर पर पहुंच गया है। सप्ताह के दौरान विदेशी मुद्रा भंडार में 1.98 बिलियन डॉलर की वृद्धि हुई। भंडार का विदेशी मुद्रा घटक 2.17 बिलियन डॉलर बढ़कर 580.66 बिलियन डॉलर हो गया। विदेशी मुद्रा भंडार का स्वर्ण भंडार घटक 207 मिलियन डॉलर घटकर 84.37 बिलियन डॉलर हो गया, जबकि विशेष आहरण अधिकार (एसडीआर) 21 मिलियन डॉलर बढ़कर 18.59 बिलियन डॉलर हो गया। रुपए में उतार-चढ़ाव को कम करने में मदद करने के लिए आरबीआई के पुनर्मूल्यांकन और विदेशी मुद्रा बाजार में हस्तक्षेप से पिछले महीनों में विदेशी मुद्रा भंडार में गिरावट का रुख अब पिछले दो महीनों में उलट गया है। इससे पहले, सितंबर 2024 में देश का विदेशी मुद्रा भंडार बढ़कर 704.885 बिलियन डॉलर के सर्वकालिक उच्च स्तर पर पहुंच गया था। देश के विदेशी मुद्रा भंडार में किसी भी तरह की मजबूती से अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपए को मजबूती मिलती है, जो अर्थव्यवस्था के लिए अच्छा है। विदेशी मुद्रा भंडार में वृद्धि अर्थव्यवस्था की मजबूत बुनियाद को दर्शाती है और आरबीआई को रुपए में उतार-चढ़ाव आने पर उसे स्थिर करने के लिए अधिक गुंजाइश देती है। मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार आरबीआई को रुपए को गिरने से रोकने के लिए अधिक डॉलर जारी कर हाजिर और अग्रिम मुद्रा बाजारों में हस्तक्षेप करने में सक्षम बनाता है।

रोहित शर्मा ने रचा इतिहास, विराट कोहली के बाद ऐसा करने वाले बने दूसरे बल्लेबाज

जयपुर(एजेंसी)। रोहित शर्मा ने मुंबई इंडियंस के लिए 6000 रन बनाने वाले पहले खिलाड़ी बनकर इतिहास रच दिया. उन्होंने गुरुवार 1 मई को जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में मुंबई इंडियंस और राजस्थान रॉयल्स के बीच खेले जा रहे मुकाबले में यह ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की है. रोहित पहले से ही मुंबई इंडियंस के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं. अब उन्होंने 6 हजार रनों का मुकाम भी हासिल कर लिया है. मुंबई इंडियंस और राजस्थान रॉयल्स मुकाबले से पहले रोहित ने 231 मैचों की 226 पारियों में 29.70 की औसत से 5971 रन बनाए थे जिसमें 131.92 की स्ट्राइक रेट से 539 चौके और 262 छक्के शामिल थे. इसमें मुंबई इंडियंस के लिए 38 अर्धशतक और 2 शतक शामिल हैं. मुंबई के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले दूसरे खिलाड़ी मुंबई के पूर्व ऑलराउंडर और वर्तमान बल्लेबाजी कोच कीरोन पोलार्ड 3915 रन हैं. उनके बाद सूर्यकुमार यादव (3460) तीसरे मुंबई के लिए सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज हैं. इस मैच में रोहित को ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल करने के लिए केवल 29 रनों की जरूरत थी. उन्होंने कुमार कार्तिकेय की गेंद पर स्वीप शॉट लगाकर 6000 रन एक फ्रेंचाइजी के लिए बनाने की खास उपलब्धि हासिल कर ली. 38 वर्षीय रोहित शर्मा ने अब तक आईपीएल में दो फ्रेंचाइजियों का प्रतिनिधित्व किया है. 2011 में मुंबई द्वारा चुने जाने से पहले वह तीन सीजन तक डेक्कन चार्जर्स के लिए खेले थे. रोहित वर्तमान में विराट कोहली के बाद आईपीएल इतिहास में दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी हैं. इस मैच में राजस्थान रॉयल्स के कप्तान रियान पराग ने टॉस जीतकर फील्डिंग करने का फैसला किया. मुंबई ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 20 ओवर में 2 विकेट खोकर 217 रन बनाए हैं. मुंबई इंडियंस के लिए रोहित शर्मा और रयान रिकेल्टन ने मिलकर पहले विकेट के लिए 116 रनों की साझेदारी की. इस मैच में रोहित शर्मा ने 36 बॉल में 9 चौकों की मदद से 51 रनों की पारी खेली. रोहित के अलावा रिकेल्टन ने 38 बॉल में 7 चौके और 3 छक्कों के साथ 61 रनों की पारी खेली. वहीं सूर्यकुमार यादव और हार्दिक पांड्या ने 48-48 रनों का योगदान दिया.

साई सुदर्शन ने तोड़ा सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड

अहमदाबाद(एजेंसी)। गुजरात टाइटंस के सलामी बल्लेबाज साई सुदर्शन ने इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 में शुक्रवार को सनराइजर्स हैदराबाद के खिलाफ गुजरात के लिए खेलते हुए एक खास उपलब्धि हासिल की है. बाएं हाथ के सलामी बल्लेबाज ने अहमदाबाद के नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में 32 रन पार करते ही यह उपलब्धि अपने नाम कर ली है. इस उपलब्धि तक पहुंचकर वो 2000 टी20 रन बनाने वाले दूसरे सबसे तेज बल्लेबाज बन गए. सबसे कम पारियों में 2000 टी20 रन बनाने वाले बल्लेबाजों की लिस्ट में शॉन मार्श सबसे ऊपर हैं. उन्होंने महज 53 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की है. सुदर्शन ने 54 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की और सबसे तेज 2000 टी20 रन बनाने का सचिन तेंदुलकर का रिकॉर्ड तोड़ दिया. बता दें कि, 2011 में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ टी20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में पदार्पण करने वाले तेंदुलकर ने 2011 में 59 पारियों में यह उपलब्धि हासिल की थी. पिछले साल 23 वर्षीय सुदर्शन ने मुंबई इंडियंस के खिलाफ आईपीएल मैच के दौरान अपनी 32वीं पारी में इस प्रारूप में 1000 रन बनाए थे.

सीएमएफ फ़ोन 2 प्रो की ओपन सेल्स 5 मई से शुरू हो रही है

नईदिल्ली। लंदन स्थित प्रौद्योगिकी कंपनी नथिंग के सब-ब्रांड सीएमएफ ने आज फ्लिपकार्ट, फ़्लिपकार्ट मिनट्स, विजय सेल्स, क्रोमा और भारत के सभी प्रमुख रिटेल स्टोरों पर सीएमएफ फ़ोन 2 प्रो के ओपन सेल की घोषणा की है, जो 5 मई दोपहर 12 बजे से शुरू होगी। पहले दिन एक स्पेशल इंट्रोडक्टरी ऑफ़र के रूप में, फ़ोन 2 प्रो कम से कम 16,999 रुपये (सभी ऑफ़र सहित) में उपलब्ध होगा। अपने सेगमेंट में सबसे बेहतरीन थ्री-कैमरा सिस्टम, शानदार ब्राइट डिस्प्ले और प्रीमियम डिज़ाइन के साथ सीएमएफ बाय नथिंग ने 28 अप्रैल, 2025 को फ़ोन 2 प्रो को वैश्विक स्तर पर लॉन्च किया। सीएमएफ फ़ोन 2 प्रो एक बेहतरीन डेली स्मार्टफ़ोन है। नथिंग द्वारा डिज़ाइन किया गया अब तक का सबसे पतला और हल्का स्मार्टफ़ोन। 7.8 मिलीमीटर की मोटाई और मात्र 185 ग्राम वज़न के साथ, सीएमएफ फ़ोन 2 प्रो लगभग भारहीन है - सीएमएफ फ़ोन 1 से 5ब पतला। इसकी खूबसूरत बॉडी में है एल्युमिनियम कैमरा सराउंड - जो पहली पीढ़ी के डिज़ाइन से विकसित हुआ है। इसमें स्टेनलेस स्टील के स्क्रू हैं जो एक ऑथेंटिक नथिंग फ़ील देते हैं जो इसके पीछे की कला को उजागर करता है। साथ ही, आईपी 54 के साथ वॉटर ड्युरबिलिटी में वृद्धि हुई - सीएमएफ फ़ोन 1 आईपी 52 था।

सीएमएफ फ़ोन 2 प्रो में उन्नत थ्री कैमरा सिस्टम है, जिसमें 50 एमपी का मुख्य कैमरा है, जो अपने सेगमेंट में सबसे बड़ा सेंसर है और सीएमएफ फ़ोन 1 की तुलना में 64ब ज़्यादा रोशनी कैप्चर करता है। दूर के दृश्यों के लिए, सेगमेंट में पहला 50 एमपी टेलीफ़ोटो लेंस 2× ऑप्टिकल ज़ूम और 20× तक अल्ट्रा ज़ूम प्रदान करता है। इसे पूरा करने के लिए, 8 एमपी का अल्ट्रा-वाइड कैमरा एक विस्तृत दृश्य क्षेत्र प्रदान करता है, जो लैंडस्केप से लेकर स्काईलाइन तक हर चीज़ के लिए एकदम सही है, जबकि 16 एमपी का फ्रंट कैमरा आपकी सबसे शार्प सेल्फी लेने के लिए तैयार है। अब अपनी 6वीं पीढ़ी में, नए अपग्रेड किए गए मीडिया टेक डाईमेन्सिटी 7300 प्रो 5जी प्रोसेसर में 8-कोर सीपीयू है जो 2.5 ब॥5 तक की गति पर चलता है ङ्क जो भारी मल्टी-टास्कर्स की माँगों को पूरा करने के लिए तैयार है। सीएमएफ फ़ोन 1 की तुलना में 10ब तेज़ प्रोसेसिंग और ग्राफ़िक्स में 5ब सुधार के साथ अत्याधुनिक प्रदर्शन।

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने जोरदार डिजाइन और 19 प्रीमियम फीचर्स के साथ इनोवा हाईक्रॉस का एक्सक्लूसिव एडिशन पेश किया

बैंगलोर: अपने ग्राहक-प्रथम पर कायम रहते हुए, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर (टीकेएम) ने इनोवा हाइक्रॉस के एक्सक्लूसिव एडिशन ZX(O) ग्रेड में उपलब्ध होने और लॉन्च किये जाने की घोषणा की। इनोवा हाइक्रॉस की उल्लेखनीय सफलता के आधार पर निर्मित यह नया संस्करण नीचे दी गई पेशकशों के साथ विशिष्ट स्टाइल और बेहतर केबिन अनुभव प्रदान करता है:

डुअल टोन एक्सटीरियर, काले तत्व, छत, सामने ग्रिल, रियर गार्निश, अलॉय व्हील्स , हुड एमब्लेम (प्रतीक), फ्रंट अंडर रन , फ्रंट ग्रिल गार्निश, व्हील आर्क मोल्डिंग, बाहरी रियर व्यू मिरर (ओवीआरएम) गार्निश, विशेष बैज, रियर अंडर रन. रियर डोर क्रोम ढक्कन गार्निश, डुअल टोन इंटीरियर, इंस्ट्रूमेंट पैनल, दरवाज़े का कपड़ा, सीट सामग्री, सेंटर कंसोल ढक्कन, हवा शोधक, लेग रूम लैंप, वायरलेस चार्जर

देश भर में एक लाख से ज़्यादा ग्राहकों में भरोसेमंद, इनोवा हाईक्रॉस ग्लैमर की अपनी असाधारण भावना और कार्यकुशलता के साथ लगातार प्रभावित कर रही है। हर यात्रा को स्टीयरिंग व्हील के पीछे बैठे व्यक्ति की तरह विशिष्ट बनाने के लिए तैयार, इनोवा हाईक्रॉस एक्सक्लूसिव एडिशन ङ्क(ह) मई 2025 से जुलाई 2025 तक दो रंगों- सुपर व्हाइट और पर्ल व्हाइट में सीमित मात्रा में उपलब्ध होगा।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, सोमवार 05 मई 2025

सुशासन तिहार : छिंदगढ़ विकासखंड में 73 आवेदनों का हुआ समाधान

रायपुर (विसं)। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा आमजन की समस्याओं के त्वरित निराकरण और जनकल्याणकारी योजनाओं के लाभ को पात्र नागरिकों तक पहुँचाने के उद्देश्य से प्रदेशभर में सुशासन तिहार 2025 का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में सुकमा जिले के छिंदगढ़ विकासखंड में सुशासन तिहार के दूसरे चरण में श्रम विभाग को प्राप्त 264 आवेदनों में से अब तक 73 का निराकरण कर लिया गया है। ग्राम रोकेल निवासी श्रीमती लक्ष्मी ने अपनी पुत्री कु. ममता के लिए मुख्यमंत्री नोनी सशक्तिकरण सुरक्षा योजना के अंतर्गत लंबित सहायता राशि के संबंध में आवेदन दिया था।

'एक राष्ट्र एक चुनाव' पर रायपुर पश्चिम में राष्ट्रीय विचार मंच द्वारा विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया

राष्ट्रीय विचार मंच ने किया एक राष्ट्र एक चुनाव पर विचार संगोष्ठी का आयोजन

'एक राष्ट्र एक चुनाव' जनता के हित में समय और व्यय दोनों की होगी बचत- राजेश मूणत

रायपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय विचार मंच ने आज रायपुर पश्चिम विधानसभा अंतर्गत 'एक राष्ट्र एक चुनाव' के संदर्भ में एक विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया कार्यक्रम में विधि और संविधान के विशेषज्ञों के अलावा मुख्य वक्ता के रूप में राजनांदगांव लोकसभा सांसद संतोष पाण्डेय, रायपुर पश्चिम विधायक राजेश मूणत, रायपुर नगर निगम महापौर मीनल चौबे राष्ट्रीय विचार मंच के संयोजक और भाजपा जिला अध्यक्ष रमेश सिंह ठाकुर सहित रायपुर के अन्य गणमान्य नागरिकों की उपस्थिति रही सांसद पाण्डेय सहित मनचासीन सभी अतिथियों ने एक राष्ट्र एक चुनाव पर अपने विचार उपस्थित जनमानस के समक्ष अपने उद्बोधन के माध्यम से रखे उद्बोधन की शुरुआत होने के पूर्व सर्वप्रथम दीप प्रज्वलन और उसके पश्चात वंदे मातरम गान संपन्न हुआ।

राजनांदगांव लोकसभा सांसद संतोष पाण्डेय आज आयोजित विचार गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे उन्होंने कहा कि एक राष्ट्र एक चुनाव विषय पर चर्चा करने हम सभी उपस्थित है जिसकी मुख्य भूमिका पूर्णत: आप सभी को स्पष्ट है इसके लाभ सीधी तौर भारत के आम जनमानस, चुनाव आयोग, भारत सरकार और सरकारी खजाने को होगा। उन्होंने पहलगाम में हुई आतंकी घटना का भी जिक्र करते हुए कहा कि आज भारत के जन गण का मन आहत है पहलगाम की घटना में देश भर के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को अपने प्राणों का बलिदान देना पड़ा मै उन सभी को आप सभी के माध्यम से नमन करता हूं श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। उन्होंने बंकिम चंद्र चटोपाध्याय की पंक्तियों के साथ भारत माता की आंतरिक शक्तियों को परिभाषित किया वन्देमातरम की पंक्तियों के माध्यम से उन्होंने बताया भारत भूमि की वंदना और उसके प्रति अपना समर्पण किस प्रकार है और हम सभी भारतीय 240 करोड़ भुजाओं के साथ इस देश की इंच इंच भूमि और प्रत्येक नर की सुरक्षा के लिए प्रतिबद्ध है और हम सभी एक होकर एक स्वर में आतंकवाद के खात्मे के लिए तैयार हैं। उन्होंने आगे कहा अब समय है कि हमे चुनाव में सुधार की आवश्यकता है, उन्होंने कहा देश के सभी सुधारों के लिए काम करने का साहसिक निर्णय लेने की क्षमता यदि किसी ने दिखाई तो वह हमारी सरकार ने दिखाई भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने दिखाया।

हर सार्वजनिक और सामाजिक क्षेत्र में विभिन्न सुधारों का कार्य नरेंद्र मोदी ने किया शिक्षा नीति में सुधार किया, स्वास्थ्य में सुधार, देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा में सुधार, तीन तलाक, 500 वर्ष पुराने मुद्दे को सर्व सहमति से दूर हमने किया, तो हम अब एक राष्ट्र एक चुनाव कराने में निश्चित ही हम सफल होंगे और हमारे देश के संसाधनों का कैफियत से उपयोग कर राष्ट्र के हित में धन और समय की बचत करना और साथ ही व्यवस्थाओं में समय बचाकर उसका उपयोग राष्ट्र निर्माण और विकास योजनाओं के लिए किया जाएगा जिससे भारत उत्तरोत्तर प्रगति कर अपने 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगा। उन्होंने कहा कि हमारे राजनैतिक जीवन की शुरुवात के समय से डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी के विचारों के साथ हम चले जिसमें हम उनके नारे को दोहराते आते हैं उन्होंने कहा था एक देश में दो विधान, दो प्रधान और दो निशान नहीं चलेगा ठीक उसी तरह अब चुनाव भी एक होगा जिससे राष्ट्र को अनेकानेक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लाभ होंगे।

विधि और संविधान संबंधी विशेषज्ञ भूपेंद्र करवंडे अधिवक्ता ने आयोजित विचार संगोष्ठी में अपने विस्तृत विचार रखे उन्होंने कहा एक राष्ट्र एक चुनाव की संकल्पना कैसे गढ़ी जाएगी इस पर हम सभी चर्चा करेंगे जिसके अंतर्गत हम इसके सभी प्रमुख लाभ, हानियों, त्रुटियों और समस्याओं पर विस्तृत विचार रखने मै आपके समक्ष हूं, किसी भी चुनाव में जिस तरह निर्वाचन आयोग की भूमिका होती है उसी तरह एक राष्ट्र एक चुनाव में सबसे बड़ी भूमिका राष्ट्रीय निर्वाचन आयोग की होगी।

रायपुर पश्चिम विधायक राजेश मूणत ने एक राष्ट्र एक चुनाव के संदर्भ में आयोजित विचार संगोष्ठी में उपस्थित प्रबुद्ध जनमानस को संबोधित करते हुए कहा कि राष्ट्र में एक चुनाव हो इसकी कल्पना को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश में एक देश एक चुनाव करवाने का प्रयास कर रहे हैं, एक राष्ट्र एक चुनाव क्यों आवश्यक है इससे देश और देश की जनता को क्या लाभ हानि होगी को लेकर राष्ट्रीय विचार मंच जनता के बीच जा रहा है जिससे चुनाव के प्रति जन मन में रहने वाली त्रुटियों और भावों को दूर कर उसका निदान कर एक राष्ट्र एक चुनाव जो देश हित में लाभकारी है को लागू करने अपना समर्थन देना है। हर वर्ष किसी न किसी प्रकार के चुनाव जनता के बीच होते रहते हैं जिसको लेकर विभिन्न शासकीय कर्मचारियों को जिम्मेदारियों के लिए लगाना विभिन्न तैयारियां करना साथ ही समय और धन व्यय करना यह राष्ट्र विकास में बाधक होता है और इसलिए इसे राष्ट्र विचार बनाना आवश्यक है मै छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का आभारी हूं कि निकाय चुनावों में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक राष्ट्र एक चुनाव के हव्य में पहली आहुति देने का कार्य किया और नगर पालिका और पंचायत चुनाव एक साथ करवा कर अपनी आहुति दी।

जैन जूस परिवार ने श्री भक्तामर विधान आयोजन का किया पुण्यार्जन

रायपुर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर श्री दिगम्बर जैन मंदिर, मालवीय रोड बड़े मंदिर जी में विराजित मूलनायक श्री आदिनाथ भगवान के समक्ष आज 04/05/2025 रविवार भक्तामर विधान श्रृंखला में आज के पुण्यार्णक श्री राज कुमार जैन दिनेश जैन कमल जैन जैन जूस परिवार के द्वारा बड़े भी भक्ति भाव से भगवान का अभिषेक पूजन, शांति धारा, भक्तामर विधान पं संजय जैन। सुरेश मोदी जीके मार्गदर्शन में अध्यक्ष यशवंत जैन, सचिव सुजीत जैन, कोषाध्यक्ष दिलीप जैन एवं कार्यकारणी सदस्य, महिला मंडल , बालिका एवं समाज के अनेक लोगों की उपस्थिति में आनंदपूर्वक संपन्न हुआ।

पं सौरभ जैन शास्त्री के मार्गदर्शन एवं श्रीमति संध्या जैन एवं संचालन में श्री आदिनाथ विद्या धार्मिक पाठशाला अंतर्गत समाज के बच्चो ने जैन विधि अनुसार आज संपूर्ण पूजन विधि एवं बाल बोध भाग 1 में व्यसन की जानकारी दी गई,धार्मिक संस्कार बच्चों में उत्साह बना रहे इसलिए सांत्वना पुरस्कार एवं संपूर्ण उपस्थित लोगों के स्वल्पाहार के पुण्यार्जक जैन जूस परिवार बने।

द.प.म. रेलवे मुख्यालय में सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग द्वारा संरक्षा और सिग्नल एवं दूरसंचार तंत्र की विश्वसनीयता पर कार्यशाला का आयोजन

बिलासपुर (विश्व परिवार)। दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के सिग्नल एवं दूरसंचार विभाग ने 2 मई 2005 को ट्रेन संचालन में संरक्षा और विश्वसनीयता पर सेमिनार का सफलतापूर्वक आयोजन किया। इसका उद्देश्य संरक्षा को मजबूत करते हुए महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे की विश्वसनीयता में सुधार करना है। इस सेमिनार में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के तीनों रेल मंडलों के एसएंडटी विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों और पर्यवेक्षी कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस सेमिनार की अध्यक्षता प्रधान मुख?य सिगनल एवं दूरसंचार इंजीनियर के कुशल दिशा निर्देश में किया गया। इस सेमीनार में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री तरुण प्रकाश की गरिमामय उपस्थिति रही। इस सेमिनार मे प्रोजेक्ट और कंस्ट्रक्शन यूनिट अधिकारियों ने भी भाग लिया। सेमिनार मे कुल 20 अधिकारी एवं 50 कर्मचारियों ने हिस्सा लिया।

सेमिनार में दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री तरुण प्रकाश ने सेमिनार को संबोधित किया और रेलवे परिचालन के सभी पहलुओं में ' संरक्षा सर्वोपरि' दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उन्होंने सभी कर्मचारियों से सिग्नल एवं दूरसंचार तंत्र की विश्वसनीयता में सुधार के लिए ठोस प्रयास करने का आग्रह किया और किसी भी सिग्नल एवं दूरसंचार तंत्र विफलता की स्थिति में पुनरावृत्ति को रोकने के लिए गहन मूल कारण विश्लेषण करने के महत्व पर जोर दिया।

सेमिनार ने सिग्नल एवं दूरसंचार तंत्र को बढ़ाने और परिचालन संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए विभिन्न रणनीतियों पर खुले संवाद और सहयोगात्मक विचार-मंथन के लिए एक मंच प्रदान किया। सेमिनार के दौरान, परिसंपत्ति संरक्षा और विश्वसनीयता के विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा और विचार-मंथन सत्र आयोजित किए गए, जिनमें मशीनरी रखरखाव, नई तकनीकों को अपनाना और समय पर हस्तक्षेप की रणनीतियाँ शामिल थीं। प्रतिभागियों ने सिग्नल एवं दूरसंचार तंत्र में सुधार, अच्छे रखरखाव करने और काम करने के कौशल को बढ़ाने के उद्देश्य से सक्रिय रूप से सुझाव दिए। विचार-विमर्श से मूल्यवान सुझाव सामने आए, जिनमें रखरखाव प्रोटोकॉल के मानकीकरण, पुराने बुनियादी ढांचे को समय पर बदलने, फील्ड स्टाफ के कौशल को बढ़ाने और भारतीय रेलवे में सर्वोत्तम क्रिया-कलापों को अपनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। सेमिनार में सिग्नल एवं दूरसंचार तंत्र मे निरंतर सुधार और सक्रिय प्रबंधन के लिए दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे की प्रतिबद्धता को रेखांकित किया गया। यह आयोजन रेलवे परिचालन में संरक्षा, विश्वसनीयता और दक्षता के उच्चतम मानकों को बनाए रखने के लिए सिग्नल एवं दूरसंचार संगठन के सामूहिक संकल्प को दर्शाता है।

शिवाजी, अहिल्या बाई, सावरकर को पाठ्यक्रम में शामिल करने डॉ. रमन ने की पहल, आभार : काले

विधानसभा अध्यक्ष आवास में सावरकर जीवनी पुस्तक विमोचन किया डॉ. रमन सिंह ने

रायपुर (विश्व परिवार)। महाराष्ट्र मंडल के अध्यक्ष अजय मधुकर काले ने कहा कि हमने विधानसभा अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह से क्षत्रपति शिवाजी महाराज, पुण्यश्लोक लोकमाता अहिल्या बाई और स्वातंत्र्य वीर विनायक दामोदर सावरकर को पाठ्यक्रम में शामिल करने की मांग की थी। हमारे मांग पत्र को महत्व देते हुए स्पीकर ने संबंधित विभाग को अपनी ओर से अनुशंसा का पत्र भेजते हुए इस पर तत्काल प्रक्रिया शुरू करने कहा है। इसके लिए महाराष्ट्र मंडल डॉ. रमन सिंह का आभारी है।

शंकर नगर स्थित विधानसभाध्यक्ष आवास पर वीर सावरकर की जीवनी पर लिखी पुस्तक का विमोचन स्पीकर डॉ. रमन सिंह ने किया। इस मौके पर उन्होंने कहा कि सावरकर को समझना है, तो ज़िन्दगी में एक बार अंडमान में जरूर जाएं और अपने जीवन को धन्य करें। आजकल के नेता दो माह जेल में रहते हैं और 15 माह न्यूज़ में रहते हैं। वहीं सावरकर जैसे देशभक्त आज भी राष्ट्र प्रेम की ज्योत जगा रहे हैं। महाराष्ट्र मंडल के अध्यक्ष अजय मधुकर काले ने कहा कि स्वातंत्र्य वीर सावरकर ने राष्ट्र प्रेम समाज जागरूकता के लिए राजनीति में सुधार के लिए 1904 में अभिनव भारत की स्थापना की थी। उन्होंने इसके माध्यम से युवाओं में राष्ट्र प्रथम स्वतंत्रता आंदोलन की अलख जगाई थी। वर्तमान में भी भारत के उज्ज्वल भविष्य के लिए युवाओं के साथ विनायक दामोदर सावरकर के विचारों को प्रसारित करने के लिए %अभिनव भारत% स्थापित करना चाहिए इसलिए 15 फरवरी को महाराष्ट्र मंडल के संत ज्ञानेश्वर सभागृह में आयोजित महापौर व पार्षदों के सम्मान समारोह में हमने मंच पर डॉ. रमन के समक्ष महापौर मीनल चौबे से रायपुर के व्यस्ततम क्षेत्र वाले चौराहे पर वीर सावरकर की प्रतिमा लगाने की मांग कर चुके हैं।

बाबूलाल गोधा के परिजनों ने पुण्यतिथि पर नेत्रदान एवं देहदान की घोषणा-सर्वत्र हो रही प्रशंसा

रायपुर (विश्व परिवार)। इंद्रावती कालोनी निवासी कीर्तिशेष बाबूलाल जी गोधा की स्मृति मे गोधा परिवार रायपुर के 8 लोगों ने मरने के उपरांत नेत्र दान एवं 1 पोते सपन ने नेत्र सहित देह दान की घोषणा की साथ ही पूरे परिवार जनों की ओर से 86 वृक्ष तीर्थ स्थल या सामाजिक स्थल मे लगाने का संकल्प लिया। साथ ही 10 पोते-पोती ने 10 युनिट ब्लड देने की घोषणा रायपुर स्थित सुराना भवन मे आयोजित श्री बाबूलाल जी जैन (गोधा) के तेरहवी कार्यक्रम के दोरान गुरुवार दिनांक 1 मई 2025 को कि शायद यह पहला परिवार होगा जिसने अपने परिवार के मुखिया के निधन उपरांत उनकी स्मृति को चिर स्थापित करने के संकल्प के साथ मानव सेवा ही माधव सेवा को सार्थक करने के साथ पर्यावरण संरक्षण के लिए भी अपनी सोच को प्रदर्शित किया है। शायद यह कार्य करने की जरूरत है समाज को अनुकरणीय है। -**अतुल जैन**

प. बंशराज तिवारी की स्मृति में 6 मई मंगलवार को नि:शुल्क रोग परिक्षण एवं निदान शिविर

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। नगर के चंदा देवी तिवारी हास्पिटल मे 6 मई मंगलवार को स्व. पं. बंशराज तिवारी की जन्मजयंती के अवसर पर अस्पताल के संचालक डॉ. प्रमोद तिवारी पौत्र डॉ नितिन तिवारी पौत्रवधु डॉ. गीतिका शंकर तिवारी द्वारा नि:शुल्क रोग परिक्षण एवं निदान शिविर का आयोजन किया जा रहा है जिसमें उदर रोग स्त्री रोग अस्थि रोग नेत्र रोग दंत रोग शिशु रोग हृदय संबंधी रोग एवं सभी प्रकार के सामान्य रोगों की जांच विशेषज्ञ चिकित्सकों द्वारा की जाएगी तथा बवासीर हाइड्रोसील हार्निया जैसे उपचार मे सर्जरी नि:शुल्क होगी आवश्यकता पड़ने पर जरूरतमंद मरीजों की खून पेशाब की जांच सोनोग्राफी ईसीजी भी नि:शुल्क की जाएगी।

अस्पताल के संचालक डा. प्रमोद तिवारी ने नि:शुल्क रोग परिक्षण एवं निदान शिविर के आयोजन को लेकर कहा कि पिता जी के सेवा कार्यों और उनके क्षेत्र के प्रति समर्पण ने हमें गरीब जरूरतमंद लोगों की निरंतर सेवा के लिए प्रेरित किया जिसके चलते उनके देहावसान के उपरांत उनकी स्मृति को अमर बनाने के लिए उनको श्रद्धांजलि देने के लिए हमने उनके जनमदिवस 6 मई को प्रत्येक वर्ष इस नि:शुल्क रोग निदान शिविर का आयोजन करते आए हैं जो लगातार 19 वर्षों से जारी है जिसमें अभी तक हजारों मरीजों को लाभ हुआ है मैं क्षेत्र की जनता से यही आग्रह करूँगा की अधिक से अधिक गरीब जरूरतमंद लोगों तक इस शिविर की जानकारी पहुंचा कर उनका सहयोग करें हम जो बेहतर कर सकते हैं वो अवश्य करेंगे।

बलौदाबाजार क्षेत्र के सबसे लोकप्रिय विधायक जननेता विकास पुरोधा अधिवक्ता पं. बंशराज तिवारी का जन्म बलौदाबाजार के तत्कालीन पटेल सेनीटेशन पंचायत के अध्यक्ष एवं मुकद्दम पं. महावीर प्रसाद तिवारी के पुत्र रूप में 6 मई 1925 को हुआ था। बाल्यावस्था में ही पिता के स्वर्गारोहण के उपरांत बंशराज जी अल्पायु में ही पटेल के पद पर पदस्थ हुए। महात्मा गांधी जी की प्रेरणा से सन् 1940 में पटेल पद से इस्तीफा देकर स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। सन् 1946 में कांग्रेस समाजवादी पार्टी के सक्रिय सदस्य रहे। विधि स्नातक उत्तीर्ण कर बलौदाबाजार में वकालत प्रारंभ की। वकालत के साथ-साथ राजनीतिक रूप से सक्रिय रहे हुए असहाय और कमजोर लोगों की भरपूर मदद की। बार काउंसिल बलौदाबाजार में सचिव रहते हुए उन्होंने पृथक छत्तीसगढ़ राज्य एवं बलौदाबाजार को जिला बनाने के लिए अपनी आवाज मुखर की। आपातकाल के दौरान अपने साथियों सहित बलौदाबाजार में तत्कालीन दमनकारी सरकार के विरूद्ध एकमात्र जुलूस निकाला जिसके फलस्वरूप वह गिरफ्तार कर लिए गए और उन पर राजद्रोह का मामला चला। समाजवादी नेता मधु लिमये, जार्ज फर्नांडिस आदि के साथ सेंट्रल जेल रायपुर में रहे। सन् 1977 में आपातकाल समाप्त होने के बाद जब देश में जनता पार्टी की सरकार बनी तब बलौदाबाजार विधानसभा से निर्वाचित हुए और सन् 1977 से 1980 के बीच विधायक रहते हुए जिस दौरान वे विधानपरिषद के मुख्य सचेतक भी रहे उन्होंने क्षेत्र के विकास के लिए अप्रत्याशित कार्य किए जिसमें क्षेत्र में डोलोमाइट परिक्षण करवा कर सीमेंट सयंत्रों के आने का मार्ग प्रशस्त हुआ जिसके कारण आज बलौदाबाजार विश्व में ख्याति प्राप्त कर रहा है जिसमे हजारों युवाओं को रोजगार मिला और आज भी रोजगार दे रहा है बलौदाबाजार नगर को पानी की किल्लत से निजात दिलाने के लिए शिवनाथ नदी में सोनाडीह से बलौदाबाजार नगर तक पाईप लाईन के द्वारा जल प्रदाय योजना लाकर पानी उपलब्ध कराना, बलौदाबाजार नगर को गांवों से जोड़ने के लिए सड़कों एवं पुल-पुलियों का निर्माण, खोरसी नाला पर बड़े पुल का निर्माण, बलौदाबाजार न्यायालय में अतिरिक्त जिला सत्र न्यायालय की स्थापना, क्षेत्र के एकमात्र निजी महाविद्यालय को शासन के आधिन करके सुविधाजनक बनाना, नगर में टेलीफोन एक्सचेंज, डाकघर, पानी टंकी का निर्माण, शासकीय अस्पताल को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र से बड़े अस्पताल का स्वरूप देना आदि कार्य प्रमुख रूप से शामिल रहे।

देर रात ड्रंक एंड ड्राइव कर वाहन चलाने वाले वाहन चालकों के विरूद्ध रायपुर पुलिस की अभियान कार्यवाही लगातार जारी

रायपुर (विश्व परिवार)। पुलिस उप महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रायपुर डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा नशे की हालत में वाहन चलाने वाले वाहन चालकों के खिलाफ सख्त कार्यवाही के निर्देश पर रायपुर पुलिस द्वारा शहर के श्री राम मंदिर, फुडहर एवं अटल नगर नवा रायपुर में बैरिकेटिंग कर ड्रंक एंड ड्राइव कर वाहन चलाने वाले 09 शराबी वाहन चालकों के विरूद्ध चलानी कार्यवाही की गई। बता दे कि शहर की यातायात व्यवस्था के सुगम संचालन में ड्रंक एंड ड्राइव वाहन चालक सबसे बड़ी बाधा है। नशे की हालत में होने के कारण स्वयं तथा दूसरे वाहन चालक के जान के लिए जोखिम भरा होता है। ऐसे वाहन चालकों पर सख्त कार्यवाही हेतु वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक रायपुर के निर्देशानुसार रायपुर पुलिस द्वारा लगातार अभियान चलाकर ड्रंक एंड ड्राइव वाहन चालकों पर कार्यवाही की जा रही है जिसके तहत विगत तीन माह के भीतर लगभग 349 से अधिक शराबी वाहन चालकों पर कार्यवाहीं की जा चुकी है।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा आसमां पब्लिसर्स इंडिया प्रा.लि. पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जयस्तंभ चौक, रायपुर से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354